आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902
डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत | विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 5 | अंक 17 | उदयपुर मंगलवार 15 सितंबर 2020 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

संझ्या की याद में कुमारिकाओं द्वारा कलात्मक अंकन

-चित्र एवं आलेख डॉ. कहानी भानावत -

श्राद्ध पक्ष कई तरह की यादों को लेकर प्रतिवर्ष आता है। पन्द्रह दिनों में परिवारों में मृत्यु प्राप्त छोटे-बड़े सभी को उनकी मरण-तिथि के अनुसार मिष्ठान्न बनाकर प्रज्वलित अंगारों पर अर्घ्य दिया जाता है। इन दिनों हवा के रूप में ये पूर्व पुरुष पूर्वज अथवा पितर धरती पर आते हैं और तृप्त होते हैं। लोकजीवन में ऐसी मान्यताएं स्वीकार्य हैं। शास्त्रों में भी ऐसे उल्लेख मिलते हैं।

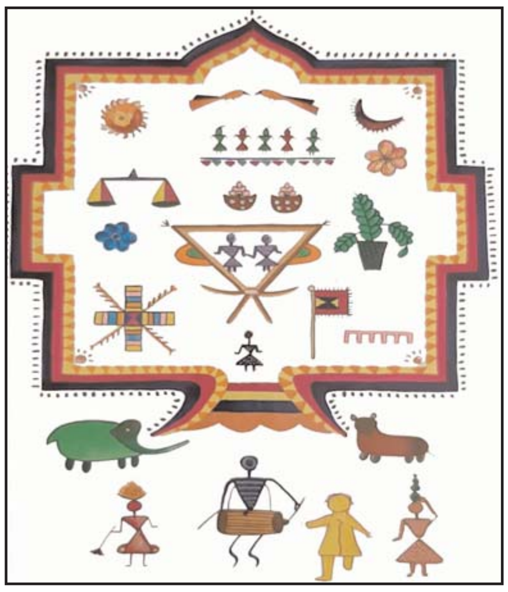

श्राद्ध पक्ष में कुंवारी कन्याएं प्रति संध्या को अपने घर के मुख्य दरवाजे के एक ओर बड़े ही कलात्मक मण्डन उकेरती दिखाई देती हैं। दीवाल पर हड़मच रंग की गोहली पर गोबर की तिथि क्रम से प्रारम्भ में संख्याजनित आकृतियां माण्डकर उन्हें विविध रंगी फूलों से सजाती हैं। उनके इस अनुष्ठानिक अभियान में उनकी माताएं, बहिनें और भाई भी पूरा सहयोग करते हैं। यह प्रचलन राजस्थान में सर्वाधिक रूप में देखने को मिलता है।

यह मण्डन सभी जातियों में पाया जाता है। आकृतियों की बनावट, उनके श्रृंगार तथा इस अवसर पर गाये जाने वाले गीतों में स्थान-भेद तथा आंचलिक जीवनधर्मिता की कला-संस्कृति के रहते आंशिक परिवर्तन अवश्य मिलता है। इस दृष्टि से प्रत्येक अंचल की बोली, भौगोलिक परिवेश, उपलब्ध वनस्पति तथा रहन-सहन के रंग-ढंग के कारण अपनाई जाने वाली वस्तु-सामग्री का प्रभाव सांझी के वैशिष्ट्य को भी दर्शित करता है।

अब तो सांझी पर अनेक विद्वानों का ध्यान केन्द्रित हुआ है परन्तु ऐसी अनेक विधाएं हैं जिनका प्रचलन जगजाहिर नहीं हो पाया तथापि सांझी पर विधिवत अध्ययन सबसे पहले डॉ. महेन्द्र भानावत ने किया। यह सन् 1959 श्राद्ध पक्ष का समय था। उन्होंने 1977 में भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर से प्रकाशित 'राजस्थान की संझ्या' नामक अपनी पुस्तक में लिखा- 'सांझी पर सबसे पहले मेरा ध्यान सन् 1959 के श्राद्ध पक्ष में गया जब मैं अपनी बी. ए. की पढ़ाई पूरी कर कलामण्डल में आया ही था। इस वर्ष मैंने सांझी का जैसा कुछ अध्ययन किया उस पर एक लेख धर्मयुग में लिखा जो अगले वर्ष की सांझी पर छपा।'

सांझी के उद्भव के बारे में डॉ. श्याम परमार ने लिखा- 'ब्रज के एक गीत में सजलदे नाम की स्त्री सांजा की पत्नी कही गई है। ब्रज की सांजी में सांझी के साथ सांजा भी पूजित है। सजलदे नाम राजस्थानी आभलदे, रूपदे, वीरमदे, मालदे आदि नामों की अनुरूपता लिए है जिससे सांझी का राजस्थानी से मूल सम्बन्ध प्रमाणित होता है।'

डॉ. भानावत ने तो सांझी के उद्भव को लेकर गुर्जरों में प्रचलित बगड़ावत लोकगाथा के हवाले से अजमेर के राजा बीसलदे के भाई माण्डलजी के पुत्र हरिजी की पत्नी लीला सेवड़ी से उत्पन्न बाघजी से माना है जिसका मुंह शेर तथा धड़ मनुष्य का था। बाघजी ने अपनी बाथ में समाई तेरह लड़कियों से जबरन विवाह कर लिया। उनमें से एक उनकी देखभाल करने वाले खोड्ये (लंगड़े) ब्राह्मण को दे दी जिसका नाम संझ्या था। उसी संझ्या के नाम से कुमारिकाओं में पूजित संज्या नामक अनुष्ठान प्रारम्भ हुआ। राजा बीसलदे का समय सन् 1158 से 1163 का है। शेष बारह लड़कियों से प्रत्येक के दो-दो संतान हुई जो परम वीर थे। ये चौईस भाई बगड़ावत कहलाये जो भीलवाड़ा जिले के आसींद के आसपास उनके नाम से बसे गांवों में पूजित हैं। आसींद में सवाईभोज का सबसे बड़ा देवरा, देवस्थल है।

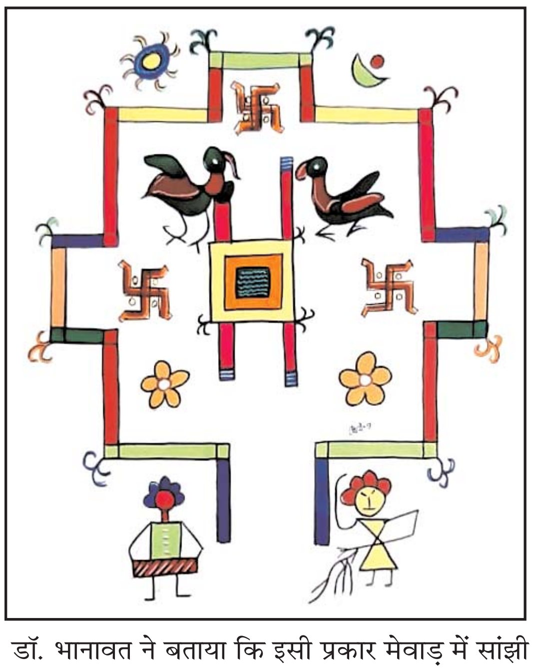

डॉ. भानावत ने बताया कि इसी प्रकार मेवाड़ में सांझी का सर्वाधिक प्रचलन और प्रभाव देखने को मिलता है। उन्होंने विविध जाति की लड़कियों से सांझी का आरती से लेकर फूल चढ़ाते, कूलर छांटते, खेल खेलते, मौन खोलते, कोट के दिन तथा अन्तिम जल विसर्जन के समय गाये जाने वाले चालीस से अधिक गीत एकत्र कर विश्लेषण प्रस्तुत कर सांझी का वैशिष्ट्य उजागर किया।

शनैः-शनैः इस कला का विस्तार होते हुए गुजरात, मालवा, ब्रज, बंगाल, हरियाणा, महाराष्ट्र आदि में इसकी लोकप्रियता की बढ़त होते नेपाल तथा विदेशों तक में प्रसार हुआ जहां भारतवंशी परिवार निवासरत हैं।

संझ्या के विविध अंकनों में पछेटे, फूल छाबड़ी, पान, खजूर, केला, कंघा, सात्या, सप्त ऋषि, पंखी, वांदरवाल, घेवर, चौपड़, कुंवारे-कुंवारी, बाजोट, तराजु, छड़ी, नाव, लड्डू, तिबारी, सिंघाड़ा, चांद-सूरज, निसरनी, फीणी नगारा, मोर-मोरनी, जलेबी जैसे अंकन बनाये जाते हैं। बारस को कोट के रूप में एक बड़े परकोटे में सुरक्षित महल सा परिदृश्य बनाया जाता है जो अन्तिम दिन तक बना रहता है। इसमें मुख्यत: संझ्या को डोली में बिठाकर विदाई दिखाई जाती है। कोट के बाहर जाड़ी जोधा, पतली पेमा, ढोल बजाता ढोली, उल्टे पांव खापर्‍या चोर, दही-दूध बेचती गुजरणी जैसे कलात्मक अंकन चीड़ों, मोतियों, अनाज के दानों से श्रृंगारित किये जाते हैं।

सौलह दिनों में लड़की षोडशी हो जाती है। संझ्या गीतों में सांझी के माध्यम से कुमारिकाओं की मनस्थिति का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और गृहस्थ जीवन की व्यवस्थित होती अनुशासित तथा गृहसज्जा का प्रशिक्षण भी प्रकारान्तर से प्राप्त हो जाता है। गीतों में अभिभावकों को अपनी लाड़ली के विवाह बन्धन में बन्धने और उसके लिए योग्य पहनावा तथा सज्जा सामग्री तैयार करने का संकेत भी मिलता है। यथा-

चांदे बैठी चिड़कली उड़ावो क्यूं नी दादासा
संझ्या बाई ने सासरे पोंचावो क्यूं नी दादासा
छटापटा रो घाघरो सिलावो क्यूं नी दादासा

संझ्या को फूलों से बहुत प्यार है। वह फूलों का सिणगार करती पाई जाती है। यथा-

- फूलां भरी छाबड़ी संझ्या बाई ने सोवे सा
- संझ्या बाई रा फूलां झूमका झूमकी
- एक फूल घटीग्यो संझ्याबाई रूसगी

संझ्या अंकनों में कौए को भी बराबर याद किया जाता है। पितृ पक्ष में यों भी कौओं को मिष्ठान्न खिलाने की परम्परा है।

- शेष पृष्ठ सात पर

संझ्या पर पहले पहल

डॉ. भानावत ने संझ्या पर सबसे पहले विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया। इस सम्बन्धी उनका पहला लेख धर्मयुग में 25 सितम्बर 1960 को 'गुड़गुड़ गुड्ल्यो घुड़तो जाय' शीर्षक से छपा। इन्हीं दिनों पहली बार डॉ. भानावत ने वैष्णव मन्दिरों में भगवान के सम्मुख जमीन पर बनाई जाने वाली, पानी में झिलमिलाती तथा केले के पत्तों में कृष्ण लीलाओं द्वारा निर्मित संझ्या पर धर्मयुग में लिखा। इसके ठीक पचास वर्ष बाद 25 सितम्बर को ही उज्जैन की परिकल्पा संस्था ने संझ्या पर अखिल भारतीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की जिसमें बालकवि बैरागी, डॉ. भानावत एवं डॉ. पूरन सहगल ने भाग लिया।

संझ्या पर डॉ. भानावत की पहली पुस्तक 'राजस्थान की संझ्या' नाम से भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर से सन् 1977 में प्रकाशित हुई और प्रथम बार डॉ. कहानी भानावत ने 1993 में राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की। सन् 2018 में सुखाड़िया विश्वविद्यालय की ड्राइंग एण्ड पेंटिंग विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. दीपिका माली ने शिल्पग्राम में दीवाल पर सबसे बड़ी संझ्या बनाने का रिकॉर्ड बना गिनीज बुक में अपना नाम दर्ज कराया।

श्राद्ध में कौए की पूछ मगर कौए हैं कहां?

-डॉ. तुक्तक भानावत -

श्राद्ध का समय शुरू हो गया है। हर वर्ष ही सितम्बर माह में आता है और पाटला पूनम (पूर्णिमा) से अमावस्या तक के दिन श्राद्ध के रहते हैं। ये दिन पितरों अर्थात् पूर्वजों के स्मरण और उन्हें धूप-दीप करने के हैं। कहते हैं वे इन दिनों धरती पर विचरण करते हैं। प्राय: संध्या को उनकी मृत्यु तिथि पर उनके लिए हलुआ-पूड़ी, खीर-मालपुए तथा तरह-तरह के मिष्ठान्न बनाकर धूप दी जाती है। वे खुशबू के भूखे हैं। शरीर तो उनके होता नहीं। हवा में बने रहते हैं। सौलह दिन में तो भलीप्रकार तृप्त होकर वे आराम की नींद शयन कर फिर गंतव्य लेते हैं।

डॉ. महेन्द्र भानावत ने बताया कि पूर्वज-पितर गृह-देव होते हैं जो घर के सदस्यों के आनन्द मंगल, सुख-समृद्धि के चाहक होते हैं। घर के किसी बुजुर्ग के शरीर में आकर वे सबके मन की बात करते हैं। सबकी समस्या का समाधान करते हैं। भावी आपदा से अवगत कराते निश्चिंत करते हैं। सकारात्मक सोच समझ देकर संतोषी मन सदा सुखी करते हैं।

बहुत से व्यक्ति अपने घरों में पूर्वजों की पूजा-प्रतिष्ठा के लिए एक तरफ किसी स्थान को चिन्हित किये रहते हैं। यहां देवता-पूर्वज जिस गति में होते हैं उसकी आकृति की सोने, चांदी, तांबा, पीतल आदि पर प्रतिछवि अंकित करने वाली मूरत (प्रतिछवि-प्रतिमा) किसी लकड़ी-बांस आदि के कण्डिये अर्थात् बक्से में कपड़े में सुरक्षित रहती है। पुरुष पूर्वज की आकृति सफेद ओछाड़ तथा महिला-पूर्वज की लाल चमचौरस कपड़े में रखी जाती है। कुछ लोग अपने गले में भी धारण किये रहते हैं। ये नावे नाम से जाने जाते हैं।

श्राद्ध पक्ष में कौए के महत्त्व की बात चलने पर लोक में प्रचलित कौए विषयक धारणा पर जैसे पिटारी ही खोल दी। बताया कि श्राद्ध में देव-नैवेद्य के लिए कौए की उपस्थिति जरूरी होती है। इसलिए उन्हें पुकार-पुकार कर बनाये गए पकवान कौओं के माध्यम से पितरों तक पहुंचाने की मान्यता है लेकिन अब तो कौए ढूंढे भी कहीं दिखाई नहीं दे रहे हैं।

पशु जगत के गहन चिकित्सक डॉ. सुरेन्द्र छंगाणी के अनुसार इस प्रजाति के विलुप्त होने के पीछे रासायनिक प्रदूषण मुख्य कारण है। जहरीले तत्व भक्षण करने के कारण कौओं की प्रजाति अथवा कुनबे ही मिट गये हैं। यह भी कि कचरा प्लास्टिक की थैलियों में पैक कर फैंकने से भी कौओं को भोजन नहीं मिल पाता है। शास्त्रों में कहा गया है कि पीपल तथा बड़ के बारीक बीज कौओं के पेट में ही परिपक्व हो उनकी बीट के माध्यम से जहां कहीं दीवालों तथा टेढ़ीमेढ़ी जगहों पर अंकुरित होने लगते हैं।

लोककण्ठों पर कौओं को लेकर बड़ा विशद वर्णन मिलता है जो चौंकाने वाला भी है। डाली पर बैठे कौए का कांव-कांव करना, चौकी पर बैठी बिल्ली द्वारा मुंह धोना, चूल्हे पर रखी चपाती सेकती केलड़ी का मुस्कराना और मेड़ी पर मोर का बोलना शुभ शकुन तथा घर में मेहमान के आने का सूचक है। कहा भी है-

मनकी चौकी मूंडो धोवे,
काग डागळे डोले हो
चूल्हा ऊपर हंसे केलड़ी,
मेड्यां मोर्या बोले हो
ऐरे कागा, ऐसे मोर्या
पियूजी आवे तो जरा उड़ जाजे
म्हारे हियूजी आवे तो जरा उड़ जाजे।

लोकगायक-गायिकाएं दोहे दे-देकर कौए के माध्यम से विरह गीतों द्वारा विरहिणियों का विरह वर्णित कर प्रियतम का आह्वान किये श्रोताओं को विरह की उदात्त पीड़ा का अहसास कराती हैं। विरहिणी प्रियमिलन की आश लिए कहती है-

कागा सब तन खाइयो,
चुन-चुन खाइयो मास।
दो नैनां मत खाइयो,
पिया मिलण री आस।।

कौए और लोमड़ी की कहानी कई प्रदेशों में बालजगत की विनोद प्रिय कथा बनी हुई है जिसमें वृक्ष की डाल पर बैठा कौआ अपनी चोंच में रोटी का टुकड़ा दबाये बैठा नीचे खड़ी लोमड़ी को तरसा रहा है। चालाक लोमड़ी उसे प्राप्त करने झूठी प्रशंसा कर कौए को फुसलाती कोई मधुर कण्ठी गाना सुनाने को कहती है। कौआ मारे प्रशंसा के फूलकर कुप्पा हो ज्योंही गाने के लिए मुंह खोलता है कि रोटी का टुकड़ा नीचे गिर पड़ता है जिसे लोमड़ी ले नौ दो ग्यारह हो जाती है।

अब बदले समय में कौआ वैसा नहीं रह शिक्षित और सावधान हो गया है अत: लोमड़ी की चालाकी समझ वह सावधान होता लोमड़ी की प्रशंसा में अपना मुंह नहीं खोलकर पास में रखा ट्रांजिस्टर खोलता है जिसकी आवाज सुन कर-भय के मारे लोमड़ी भागती बनती है। इससे कहानी मरती-मरती बचते हुए जीवंत हो उठती है।

आधुनिक कवियों ने भी कौए को लेकर काव्य-सृजन में अपना उल्लेखनीय योग दिया। आदिवासी महिला का पति मृत्यु शैय्या पर है और उसकी लाड़ली बिटिया के हाथ पीले करने हैं। फसल ही एकमात्र विकल्प है जो लहलहा कर पूर्णता की ओर है मगर कौए उसे नुकसान पहुंचाने को उद्धत हैं। ऐसी स्थिति में वह कौए को सम्बोधित कर कहती है- कुंभलगढ़ से जनकवि माधव दरक ने फोन पर अपनी ये पंक्तियां साझा की- ''कागला मत करजे नुकसान / लाड़ली री आवेली जान / हाथ पीला करना है मान कागला.....।''

कौए के सम्बन्ध में यह तथ्य सर्वाधिक मननीय है कि उसका यदि वह नर है तो मादा कौन है और यह भी कि कोयल यदि मादा है तो उसका नर कौन है? पक्षीविदों में इसका कोई पुख्ता जवाब नहीं है। महाकवि जयशंकर प्रसाद ने जब लिखा- 'अहा कौन है, पंचम स्वर में कोकिल बोला' तो आलोचकों ने यह लिख उनसे सवाल करते समाधान दिया कि पंचम स्वर में कोकिल बोलती है जो मादा है। कौआ और कोयल प्राय: एक जैसे होते हैं। बसंत ऋतु आने पर ही दोनों की पहचान होती है। जब कोयल कुहु-कुहु और कौआ काँव-काँव बोलता है। संस्कृत में कहा भी है - ''बसन्त काले समीपे काक: काक: पिक: पिक:।''

डॉ. भानावत ने बताया कि लोकजीवन में भी इस सम्बन्ध में मान्यता पर बहुत खोजबीन की पर कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला पर एकाध व्यक्तियों ने खुलासा करते पुख्ता जानकारी से मुझे संतुष्ट किया कि कोयल का नर कौआ होता है जिससे उसकी संतति बढ़ती है और उसी के घोंसले में कोयल के बच्चे पलते हैं।

साहित्य क्षेत्र के तीन दिग्गज नहीं रहे

(1) काव्य रसिक पर्जन्य परलोकगमन :

जादूगर, साहित्यकार एवं पत्रकार के रूप में प्रसिद्ध 70 वर्षीय लालदास 'पर्जन्य' का हृदयघात से असामयिक निधन हो गया। विगत 45 वर्षों से वे जादू कला की मासिक पत्रिका 'कला श्रृंखला' का नियमित प्रकाशन कर रहे थे। इसमें देश-विदेश में प्रदर्शन कर रहे जादूगरों के बारे में तथा जादू कला विषयक जानकारी से पाठकों को समृद्ध करने का भरकस प्रयत्न कर रहे थे। उनकी प्रेरणा से युवक-युवतियों ने भी इस कला में प्रवेश कर ख्याति अर्जित की।

उदयपुर की साहित्यिक संस्था 'युगधारा' से जुड़कर उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में भी अच्छी हलचल दी। अध्यक्ष पद पर रहते अनेक नवयुवक-युवतियों को जोड़ा और नियमित रूप में कला श्रृंखला में भी स्थान दिया।

युगधारा के संस्थापक डॉ. ज्योतिपुंज ने बताया कि विगत पांच दशकों से वे काव्य की विविध धाराओं में रचना कर युगधारा के सदस्यों में बड़े लोकप्रिय रहे। उन्होंने राजस्थानी में एक खण्डकाव्य लिखा और हाल ही में 'दुख रो बरसे मेह' नामक राजस्थानी में गीत संग्रह का प्रकाशन कराया जो लोकगीतों की लोकप्रिय धुनों पर है। युगधारा ने उनके निधन पर शोक सभा आयोजित कर उनके कर्म सृजन के विविधपक्षी प्रभावों को रेखांकित किया। श्री पर्जन्य ने अन्य पुरस्कारों के साथ कन्हैयालाल धींग पुरस्कार भी प्राप्त किया।

(2) हिन्दी-राजस्थानी के हरमन चौहान हरिशरण हुए :

हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा पर समान रूप से अपनी लेखनी को धार देने वाले सुधि सुविज्ञ हरमन चौहान का 78 वर्ष की उम्र में 08 सितम्बर को निधन हो गया। उन्होंने बम्बई दूरदर्शन के समाचार विभाग से सेवा प्रारम्भ कर हिन्दुस्तान जिंक में बतौर राजभाषा अधिकारी अपनी सेवाएं दीं। एक समालोचक, कवि तथा व्यंग्य लेखक के रूप में उन्होंने अपनी पहचान तथा पैठ बनाई और पूत के पांव, उसके इंतजार में, सच बोले कौआ काटे, हंसा चुगे कंकड़, ठावा लोग ठावी वातां, ओय धन जैसी उत्कृष्ट कृतियां दीं।

हरमन अन्तिम समय तक सृजनरत रहते विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपते रहे। वे निरंजन नाथ आचार्य, हिन्दी सेवी सम्मान, शिवचन्द भरतिया, कन्हैयालाल धींग आदि पुरस्कारों से सम्मानित हुए। उनका परिचय क्षेत्र बड़ा व्यापक था। कलकत्ता से रतन शाह, जयपुर से वेद व्यास, कांकरोली से कमर मेवाड़ी, जैसलमेर से दीनदयाल ओझा, चैन्नई से डॉ. दिलीप धींग, मुम्बई से जीतसिंह चौहान, दिल्ली से डॉ. रेखा व्यास तथा उदयपुर से डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी, डॉ. महेन्द्र भानावत, डॉ. देव कोठारी, डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना, डॉ. ज्योतिपुंज, प्रो. देवकर्णसिंह राठौड़, डॉ. तुक्तक भानावत ने शोकांजलि व्यक्त की और हिन्दी-राजस्थानी क्षेत्र की अपूरणीय क्षति बताते कहा कि अपनी सहृदयता तथा स्नेहिल व्यवहार से उन्होंने सबका मन हर लिया।

(3) शिक्षा-समाज के धुन धनी शान्ति बाबेल चल बसे :

कानोड़ में शान्तिचन्द्र बाबेल का 13 सितंबर को निधन हो गया। शिक्षा, समाजसेवा तथा धार्मिक क्षेत्र में उन्होंने आजीवन धुन के धनी होकर ठोस कार्य किया। वे आम लोगों में 'नेताजी' नाम से चर्चित एवं लोकप्रिय थे। खद्दर की टोपी, जब्बा तथा धोती पहने वे सदैव एक इकलौते ही थे। एक वह समय था जब अधिकाधिक लोग सिर पर सफेद टोपी धारण करते थे पर उदय जैन के बाद ये ही वैसे कर्मशील तथा शिक्षा-संस्था के लिए समर्पित बने रहे।

कानोड़ में जब आचार्यश्री तुलसी का पधारना हुआ तो उनकी यादगार को स्थायी रूप देने के लिए शान्तिचन्द्र आगे आये और अमृत जयंती वर्ष में तुलसी अमृत निकेतन संस्थान की स्थापना की जो मेवाड़ में नामचीन शिक्षा नगरी के रूप में सुनाम लिए है।

तुलसी अमृत निकेतन के सचिव मनोज भानावत ने बताया कि वर्तमान में लगभग दो हजार छात्र शिक्षण ले रहे हैं। इनमें कस्बे के अलावा आसपास के गांवों की छात्र-छात्राएं भी आती हैं जिनके लिए बस सेवाएं उपलब्ध हैं। छात्रों के लिए सभी आवश्यक सुविधाओं से युक्त छात्रावास की उत्तम सुविधा है। उच्च शिक्षण के लिए होनहार शिक्षकों द्वारा शिक्षण की सुव्यवस्था का ही परिणाम है कि प्रतिवर्ष ही यहां पढ़े छात्र प्रथम दस में अपना रैंक अर्जित करते हैं। होनहार तथा आर्थिक स्थिति से कमजोर छात्रों को पढ़ाई की विशेष सुविधा के साथ आर्थिक सहयोग भी सुलभ कराया जाता है। इस सत्र से महाविद्यालयी शिक्षा प्रारंभ की जा रही है।

उल्लेखनीय है कि नेताजी की शवयात्रा में प्रो. धनेशचन्द्र भाणावत, करण कोठारी, सवाईलाल पोखरना, सोहन भानावत, परसराम सोनी, शान्तिलाल धींग, दिनेश कुदाल आदि थे। इनके अलावा डॉ. देव कोठारी, डॉ. जे. के. ओझा सहित बड़ी संख्या में शिक्षाप्रेमी, समाजसेवी, धर्मजीवी, अधिकारी तथा स्नेहीजनों ने वाचिक शोकांजलि व्यक्त की।

तीनों हुतात्माओं को शब्द रंजन की हार्दिक श्रद्धांजलि।

स्मृतियों के शिखर (107) : डॉ. महेन्द्र भानावत

मेवाड़ में दो बिहारियों का काव्योत्कर्ष

राजस्थान में जिन तीन बिहारियों की कविता त्रिवेणी बही उनमें से दो तो मेवाड़ के ही थे। यहीं रहकर उन्होंने कविता की और अपनी पहचान बनाई। जयपुर के कवि बिहारी तो अपने दोहों के लिए ही अमर हो गये। उनकी लिखी 'बिहारी सतसई' उन्हें सदा ही अमर बनाये रखेगी। मेवाड़ के बिहारी कवियों में एक तो रसिक बिहारी हुए जिन्होंने अयोध्या से आकर कानोड़ अपना सृजन-स्थल बनाया और वहीं 'राम रसायन' की रचना की। दूसरे हेम बिहारी हुए जिनका पूरा जीवन कैलाशपुरी-एकलिंगजी में व्यतीत हुआ। उन्होंने 'मानस मंथरा' नामक महाकाव्य लिखा।

(1) श्मशानी कवि हेम बिहारी :

हेम बिहारी दो-चार घर पढ़े थे। अलवर से चौदह वर्ष की उम्र में वे यहां अपनी नानी के पास आ गये। प्रारम्भ में एकलिंगजी में जो ख्याल-तमाशे करने वाले आते, गाने-बजाने वाले आते, बहुरुपिये

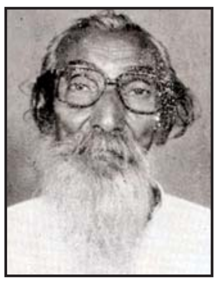

आते उनके साथ हेम बिहारी का गहरा सम्पर्क हो जाता तब वे भी गाने, बजाने, नाटक, तमाशा करने उनके साथ हो जाते। इससे उन्हें कविता करने की रूचि हो गई। ख्याल-तमाशे लंगड़ी लावणियों में लिखे होते जो जनता पर बड़ा प्रभाव छोड़ते। ऐसे करते-करते हेम बिहारी कवि और कलाकार के रूप में अपनी पहचान देने लगे।

फिर उदयपुर के राजघराने के श्मशान स्थल महासतियांजी में उनकी नौकरी हो गई। यहां सिवाय छतरियों की देखभाल के कोई काम नहीं था तब हेम बिहारी धार्मिक और आध्यात्मिक सोच में डूबे रहते। उसी तरह के छन्द लिखते। ऐसे ही ग्रन्थों का वाचन करते। ऐसी ही संगीत की, संगत की, साधु-सन्तों की महफिल जुड़ती। वहां उन्होंने गीता के उपदेशपरक गीत लिखे। बाद में 'गीता के गीत' नाम से उनकी कृति प्रकाशित हुई।

मैं पहलीबार उनके निवास पर 25 सितम्बर 1993 को एकलिंगजी में मिला तब उन्होंने कहा भी

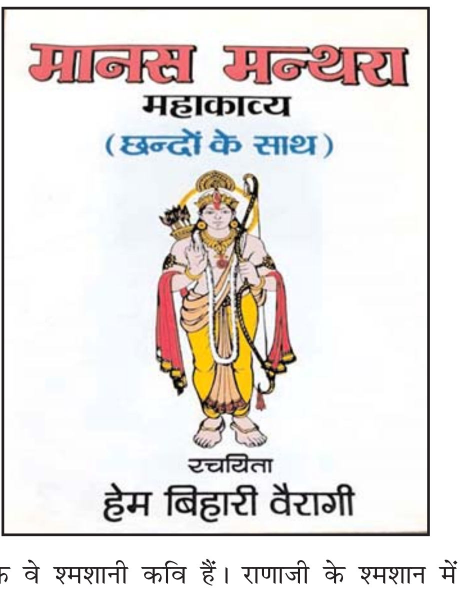

कि वे श्मशानी कवि हैं। राणाजी के श्मशान में रहकर वे कोई मोटी रचना नहीं कर सकते थे अत: गीता के गीतों से वे तन्मय भी होते रहे और श्मशानी राग-रंग को भी जीते रहे।

भजन कविता नाटक वे निरन्तर लिखते रहे। उनका सांगीतिक मंचन करते रहे। अपना, प्रभु का और जनजीवन का रंजन करते रहे। तीर्थस्थल होने के कारण साहित्य संस्कृति कला के मनीषियों के साथ राजनेताओं का भी एकलिंगजी के दर्शनार्थ आना-जाना होता तो हेम बिहारीजी से ही सबका मिलना होता।

कवि विकल भी इसी तरह वहां आये। उनसे कई दिनों तक हेम बिहारी से चर्चा होती रही। रामायण के उपेक्षित पात्र मंथरा पर जब चर्चा छिड़ी तो विकलजी ने उसी पर काव्य लिखने की प्रेरणा दी। यह सुन हेम बिहारी को रातभर मंथरा की कल्पनाएं उद्वेलित करती रहीं। उन्हीं दिनों मैथिलीशरण गुप्त का 'साकेत' प्रकाशित हुआ। उसमें उर्मिला पर जब इतना कुछ लिखा पाया तो उनके मन में भी मंथरा पर लिखने का दृढ़ निश्चय हो गया।

उदयपुर में मैंने भी कवि विकल से भेंट की। भेंट ही नहीं, बड़ी देर तक उनसे काव्य-पाठ भी सुना। आकाशवाणी में भी उनका काव्य-पाठ हुआ। अन्य और भी कवियों से मैंने उनकी भेंट कराई। वे अपनी लम्बी दाढ़ी और धोती-जब्बे में निराली ठसक लिये थे।

हेम बिहारी ने बताया कि मंथरा काव्य शुरू हुआ तो कई विघ्न आते रहे। अन्तत: चौदह वर्ष में जाकर वह पूरा हुआ। मैंने तब कविजी से कहा भी था कि मंथरा लोकजीवन का शुभ पात्र नहीं है। उसी के कारण राम ने चौदह वर्ष का वनवास लिया। आपने भी चौदह वर्ष श्मशान में काटे। लगता है चौदह वर्ष की संगति आपके जीवन में भी कोई गुल खिलायेगी। मेरा यह कथन सुन वे बड़े प्रसन्न हुए। उनकी यह खुशी इतनी अकूत हो गई कि कुछ कहते नहीं बना।

मैंने कहा, आपसे भेंट कर हम ही अपना जीवन धन्य कर रहे हैं। मेरे साथ सुरेन्द्र शर्मा थे जो 'सुलगते प्रश्न' नामक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित करते थे। मुझे उन्होंने अपने साथ गहराई से जोड़े रखा था। पहली बार उसी में मैंने हेम बिहारी पर लिखा था। हमारे प्रयत्न से हेम बिहारी उदयपुर आकाशवाणी केन्द्र बुलाये गये। उन्होंने पहलीबार आकाशवाणी का स्टूडियो देखा। डॉ. इन्द्रप्रकाश श्रीमाली ने बताया कि हेम बिहारीजी से रेकार्डिंग के बाद लम्बी बातचीत होती रही।

यहां आकर उन्हें लगा कि उनका कविता लिखना सार्थक होगया। पूरे घरवालों, पास-पड़ोसियों और समधीजनों के बीच उन्होंने अपना प्रसारण सुना मगर दूसरे ही दिन उन्होंने बिस्तर पकड़ लिया। जब हमें सूचना मिली तो मैं तथा नंदबाबू उनसे मिलने पहुंचे। वे हमें थके मांदे तथा ठंडे ही लगे। उनकी चेतना शक्ति जाती रही।

हमने इसकी खबर अखबारों में दी। साहित्य अकादमी ने उन्हें आर्थिक सहयोग दिया। कविजी इस स्थिति से उबर भी नहीं पाये कि इस बीच उनकी पत्नी का निधन हो गया। अपनी देह में रहते हुए भी हेम बिहारी विदेह ही बने रहे। इसी अवस्था में साहित्यिक संस्था 'युगधारा' ने उनका जो सम्मान किया वह अच्छे महामनीषियों को भी नसीब नहीं होता।

युगधारा के संस्थापक डॉ. ज्योतिपुंज ने बताया कि सम्मान से उनकी व्यापक पहचान बनी और उनका ग्रंथ भी प्रकाशित हो गया जिससे उन्हें अच्छी राशि भी सुलभ हुई। यह आयोजन 1995 में 06 अगस्त को हुआ। इसी में उनके महाकाव्य का लोकार्पण हुआ। इसके बाद 20 अक्टूबर 1995 को उन्होंने अपनी इहलीला भी पूरी करली।

उनके पुराने लम्बे समय के साथी रहे पं. खूबीलाल 'पंकज' ने बताया कि एकलिंगजी मन्दिर में उनके साथ उन्होंने कई बरस बिताये। कोई दिन ऐसा नहीं गया जब उनके साथ काव्यबाजी, कविताबाजी याकि भजनबाजी, सत्संग याकि संकीर्तनबाजी न हुई हो। उनके लिखे एक सौ आठ भजन एकलिंगनाथ का बखान करते नहीं थकते। उनके गुरु बालानंदजी थे जो उन्हें कविता में दीक्षित करते रहे। वे कहते, लिखते रहो और ये लिखते रहे। ऐसा करते-करते ये महाकवि ही हो गये।

एक सरल और सहज कवि के रूप में हेम बिहारीजी ने जो जीवन जिया वैसा आने वाले कवि शायद जी पायेंगे। उस समय भी जब छन्द-लय की कविता की पहचान धूमिल पड़ गई तब भी हेम बिहारी बड़े धैर्य के साथ लावणी जैसे लोक छन्द में पांच हजार से अधिक छन्द देकर महाकाव्य लिखते रहे। वे यों तो बड़े अल्प प्राण थे पर अपनी कविताई और जीवन जीने की संगत में महाप्राण बने रहे।

(2) रामरसायन के महाकवि रसिक बिहारी :

दूसरे कवि रसिक बिहारी थे। झांसी में वि.सं. 1901 में पोष सुदी 7 को उनका जन्म हुआ किंतु बाद में अयोध्या में संत बन वहां के कनक भवन के महंत बने। वहां से चलते वे मेवाड़ आकर कानोड़ रहे। यहां रह उन्होंने कई ग्रंथों का प्रणयन किया। मेरी जन्मभूमि वाला यह गांव मेवाड़ राज्य के प्रमुख सौलह ठिकानों में अग्रणी रहा। कानोड़ का पानी उनके लिए राम रसायन सिद्ध हुआ।

इससे पूर्व वे कानोड़ के पास के बड़ीसादड़ी ठिकाने पहुंचे। इतिहासविज्ञ स्वरूपसिंह चूंडावत ने बताया कि वहां के राजराणा दुल्हेसिंह एक रात्रि अपने महल में रईश उमरावों के साथ राग-रंग में डूबे हुए थे तभी जानीमानी गायिका सरसी को बुलवाया गया। अपने गायन की बुलंदगियों और स्वर-माधुर्य से सरसी ने हर दिल अजीज कर रखा था। वह विरहकंठी ही नहीं थी, अपने रूप और लावण्य में भी ऐश्वर्य को छलकाने वाली थी। मौके का लाभ उठाते हुए वहां उपस्थित राव-रईशों ने ईर्ष्यावश सरसी के बाद कविजी से कविता सुनाने की फरमाईश की। रसिकबिहारी इस छल को ताड़ गये। उनके मन में आक्रोश तो था ही। फिर सरसी के सुमधुर गाने के बाद उनको सुनना उन्होंने अपना अपमान समझा। वहां उपस्थित रईशों की मनस्थिति भांपते हुए तत्काल रचा एक छप्पय सुनाया जिसकी आखिरी पंक्ति थी- 'बैठे कुरसी पै पर नैन सरसी पै हैं।' यह छन्द सुनते ही पूरी महफिल में सन्नाटा छा गया।

रसिकबिहारी जान गये कि अब उनका यहां रहना सम्भव नहीं है। अत: दूसरे ही दिन वे कानोड़ चले गये जहां ठिकानाधिपति रावत नाहरसिंह ने उन्हें सम्मानपूर्वक अपने निजी बगीचे में शरण दी। दोनों हम स्वभावी थे इसलिए दोनों के खूब पटती थी। रसिक बिहारी का मूल नाम जानकीप्रसाद था। राम रसायन की रचना संवत् 1939 चैत्र सुदी 11 से प्रारंभ कर 8 माह 17 दिन में पूरी की। इसे नाहरसिंहजी ने संवत् 1951 में छपवाया और ठिकानों के जागीरदारों तथा श्रेष्ठीजनों को भेंट किया। 'राम रसायन' में ग्यारह हजार श्लोक हैं। इसके अलावा रसिक बिहारी ने छोटे-बड़े 30 से भी अधिक काव्य ग्रंथ लिखे। 'राम रसायन' की प्रति मेरे पास भी सुरक्षित है। यह मुझे साहित्यसेवी विपिन जारोली से प्राप्त हुई।

कविता प्रेमी ठिकानेदार नाहरसिंहजी स्वयं कवि थे। वे प्रति सप्ताह अपने यहां काव्यगोष्ठी का आयोजन करते। खासतौर से बच्चों के आयोजनों में उन्हें बड़ी रुचि रहती थी। वे बच्चों की प्रतियोगिता आयोजित कर उन्हें खासा इनाम देते। रसिक बिहारी नाहरसिंहजी के घनिष्ट अन्तरंग हो गये। एकबार एक बकरे ने कविजी के निवास वाला बाग उजाड़ दिया तो कवि रसिक बिहारी इतने बिगड़े कि वह बकरा बें-बें करता बुरी मौत मरणासन्न रहा।

रावत नाहरसिंहजी के पश्चात करणीसिंहजी ठिकाने के जागीरदार बने। वे भी कविता रचना करते। करणीसिंहजी के सुपुत्र प्रतापसिंहजी से मैं 25 जून 1984 को उनके ठिकाने रावले में मिला। उन्होंने बताया कि उनके पिताश्री की तरह वे भी कविताएं लिखते हैं।

इसी परम्परा में पूर्व में रावत मानसिंह बड़े बहादुर और जबर रणबाज हुए। सुबह नाश्ते में उन्हें एक बकरे का मांस दिया जाता। बांदनवाड़ा के बहुप्रसिद्ध युद्ध में उन्होंने जबर्दस्त शौर्य और पराक्रम दिखाया फलत: उस रणक्षेत्र में ही उनकी छतरी बनी हुई है। विवाह पश्चात हर जोड़ा उनके नाम की जात देता है। साहित्यसेवी भैरूसिंह राव ने बताया कि उनकी मृत्यु के बाद उनका खून दुश्मन के साथ न मिल सके अत: उनके वफादार कुत्ते ने उनके पास नाली बनादी। वहीं उनके पास इस कुत्ते का भी स्मारक बना हुआ है।

प्रतापसिंहजी ने बहुत सारे हस्तलिखत ग्रंथ, रूक्के, पट्टे परवाने तथा किताबें आदि अपने ठिकाने का विपुल संग्रह मुझे बताया जो बड़ा विशाल, समृद्ध तथा अलभ्य था। वे अपने ठिकाने का सिलसिलेवार इतिहास लिखवाना चाहते थे किन्तु वैसा नहीं कर सके। उदयपुर में भी मेरी उनसे पंचवटी स्थित निवास पर भेंट होती रही लेकिन जब मैंने यह सुना कि ठिकाने का सारा संग्रह किसी कबाड़ी को बेच दिया है तो मुझे घोर अफसोस हुआ।

कानोड़ में पं. उदय जैन महाविद्यालय में अध्यापनरत इतिहासकार डॉ. जे. के. ओझा को जब पता चला तो उन्होंने उस रद्दी वाले कबाड़ी से दो ट्रक संग्रह खरीदकर महाराजकुमार डॉ. रघुवीरसिंहजी सीतामऊ को भिजवाया। डॉ. ओझा ने ठिकाने के अनेक ग्रंथों का उद्धार करते इतिहास की प्रामाणिकता का संरक्षण दिया। उन्होंने रसिक बिहारी पर एक उम्दा लेख भी पिलानी से प्रकाशित मरु भारती शोध-पत्रिका में छपाया। उन्होंने बताया कि राम रसायन का पुनर्मुद्रण राजस्थान विद्यापीठ वि. वि. के कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत ने उदयपुर के हिमांशु पब्लिकेशन्स से करवाया।

आकाशवाणी उदयपुर द्वारा जब कानोड़ में मैंने एक कवि सम्मेलन आयोजित करवाया तब डिंगल कवि प्रो. देवकर्णसिंह राठौड़ ने सबसे पहले यह दोहा पढ़कर कानोड़ की धरा और रसिक बिहारी को नमन करते श्रोता-समुदाय को धन्य कर दिया-

कवियां री धरती कहूं, कै शूरां सिरमोड़।
रसिक बिहारी री धरा, या रसिकां री कानोड़।।

कानोड़ में कवि रसिक बिहारी का नाम आज भी साहित्यजीवियों, रसिकों के मन में आदर के साथ पैठा हुआ है। डॉ. इन्द्रप्रकाश श्रीमाली ने बताया कि आकाशवाणी प्रसारण सेवा में रहते हुए उन्हें एक नहीं, कई-कई ऐसे सुअवसर मिले, जब उन्होंने मेवाड़ में बिखरी हुई प्रतिभाओं को आकाशवाणी प्रसारण के सुअवसर प्रदान किये। ये प्रतिभाएं काव्य, संगीत, नाटक, खेल आदि से सम्बन्धित थीं। कुछ अल्पज्ञात थे तो कुछ प्रचार-प्रसार के नितान्त अंधकार में विलीन हुए थे। जब कभी कोई किसी समाज या संगठन के कार्यक्रम होते तो वे अपने मित्रों के साथ प्रदर्शन के दौरान प्रतिभाओं की छानबीन कर उन्हें प्रसारण हेतु आकाशवाणी में आमंत्रित करते। उन्होंने कवि हेम बिहारी और रसिक बिहारी पर भी वार्ताएं प्रसारित कीं।

शब्द रंजन

उदयपुर, मंगलवार 15 सितंबर 2020

सम्पादकीय

शहर बनते गांवों की सुध

भारत गांवों का देश है। कवियों ने भारतमाता ग्रामवासिनी, अहा ग्राम्यजीवन ही क्या है, मैं भारत बनूंगा, जगत में स्वर्ग हमारा देश कहकर भारतमाता की अभ्यर्थना की। आजादी के बाद गांवों के विकास के बड़े वादे, बड़ी घोषणाएं, बड़े प्रयत्न और बड़े आर्थिक पैकेज आवंटित हुए पर हुआ क्या?

झुग्गी झोंपड़ियों की संख्या बढ़ रही है। गाड़ोलिया लुहार घुमक्कड़ बने हुए हैं। बेघरबारियों की वृद्धि हुई है। रात्रि बसेरों में भीड़ जुटी है। फुटपाथों पर सोने वाले थमने का नाम नहीं ले रहे हैं।

दो बातें हैं। व्यक्ति स्वयं बदले, स्वत: प्रयत्न करे या बदलने को मजबूर किया जाय। लोभ-लालच दिया जाय। उपदेश-शिक्षा-सीख दी जाय तब भी कोई बदलने को राजी क्यों नहीं होता और बिना प्रयत्न के कैसे और क्यों कोई स्वत: स्फूर्त मंजिलें पार करता विकास के सोपान चढ़ता रहता है?

एक ओर व्यक्ति भरापूरा परिवार छोड़ त्यागी संन्यासी बनने पलायन कर जाता है और दूसरी ओर पलायन करने वाला परिग्रह की केंचुकी से मुक्त नहीं हो पाता है। अच्छी खासी प्रतिष्ठा अर्जित करते हुए भी बड़े अधिकारी तक भ्रष्टाचार की सुर्खियों में रह कौनसा आदर्श प्रस्तुत कर रहे हैं और किसको संस्कारित कर रहे हैं?

भारत भूमि सबसे निराली, अनूठी, अजूबी भूमि कही गई है। यहां जितने तीर्थ, मन्दिर, धर्मस्थल और धार्मिक आध्यात्मिक स्थल हैं, अन्यत्र कहीं नहीं हैं। एक-एक दिन से लेकर महीनों-महीनों मेलेठेले, धार्मिक आयोजन, धर्मोपदेश, धार्मिक कथा-वार्ता, गायन-नर्तन-वादन-प्रदर्शन, संकीर्तन होते हैं और श्रद्धालुओं का जितना उमड़ाव मिलता है, दांतों तले अंगुली दबाने वाला है। कंदराओं, गुफाओं में अदृश्य संत-महात्मा साधना-तपस्या में सूक्ष्मजीवी बने हैं। यहीं, इसी पृथ्वी पर देवगण मानव-भेख में आकर क्रीड़ा-लीला करते हैं। भूतों के, दिव्य आत्माओं के मेले यहीं लगते हैं।

वह कहानी अभी भूली नहीं गई है जिसमें एक अमीर पिता अपने बेटे को गांव घुमाने, यह देखने ले जाता है कि वहां के लोग कितने गरीब हैं और बेटा कितना खुशहाल है। सुनिये-

बेटे को सबकुछ दिखाकर जब वह लौट कर पूछता है तो बच्चा उत्तर देता है- ''बहुत बढ़िया लगा। पिता ने पूछा, तुमने देखा गरीब कैसे होते हैं? बेटे ने कहा, हां जरूर। पिता फिर बोले, तो तुमने इस ट्रिप से क्या सीखा? बेटे ने जवाब दिया, मैंने देखा कि हमारे पास एक कुत्ता है, उनके पास चालीस। हमारे पास एक स्विमिंग पूल है और उनके पास अंतहीन छोटी नदी। हमारे बगीचे में लालटेन लगे हैं और उनके पास रात के सितारे हैं। हमारा आंगन बाहर तक ही है और उनके पास पूरा क्षितिज है। हमारे पास रहने के लिए छोटी सी जमीन है और उनके पास खेत हैं जो हमारी नजर से भी परे हैं। हमारे पास हमारी सेवा के लिए नौकर हैं, लेकिन वे दूसरों की सेवा करते हैं। हम खाना खरीदते हैं, वे अपना खाना उगाते हैं। हमारी सुरक्षा के लिए आस-पास दीवारें हैं, उनकी रक्षा उनके दोस्त करते हैं। लड़के के पिता निशब्द हो गए। बेटा आगे बोला, इससे मुझे पता चला कि हम कितने गरीब हैं।''

मेवाड़ के प्रथम शिक्षक पं. विनायक शास्त्री

मेवाड़ राज्य के प्रथम शिक्षक पं. विनायक शास्त्री थे जो महाराणा शंभूसिंह के आग्रह पर काशी से उदयपुर आये। काशी से अजमेर तक

रेल से आकर फिर अजमेर से उदयपुर बैलगाड़ी में सवार होकर लाये गये। तब रेल सुविधा नहीं होने से उन्हें अजमेर से उदयपुर आने में सात दिन लगे।

पं. विनायक शास्त्री ने महाराणा शंभूसिंह, महाराणा सज्जनसिंह और महाराणा फतहसिंह के समय तक अपनी सेवाएं दीं। वे संस्कृत एवं गणित विषय के प्रकाण्ड पंडित तथा उद्भट विद्वान थे। उन्होंने एक आदर्श शिक्षक के रूप में न केवल महाराणा अपितु अन्य दरबारियों एवं जनता में भी अपनी लोकप्रियता की अमिट छाप छोड़ी। शिक्षक दिवस पर उन्हें स्मरण कर विनम्र श्रद्धांजलि।

-डॉ. जे. के. ओझा

अंतर्राष्ट्रीय मंच पर प्रणत की प्रभावी प्रस्तुति

उदयपुर (विज्ञप्ति)। बम्बोरा के प्रणत धींग ने 2 सितंबर को अंतर्राष्ट्रीय बालकवि सम्मेलन में अपनी प्रस्तुति से सबको मुग्ध कर दिया। भारतीय संस्कृति सेवार्थ न्यास, हरिद्वार एवं फेडरेशन ऑफ कम्युनिटी रेडियो स्टेशन्स, दिल्ली के तत्वावधान में यह कार्यक्रम अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी वर्चुअल पखवाड़े के अंतर्गत हुआ। इसमें भारत के तीन और फीज़ी के चार प्रतिभागी थे।

प्रणत ने अपने मुक्तक एवं डॉ. दिलीप धींग द्वारा रचित कविता 'दगा किसी का सगा नहीं' सुनाई। अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी प्रचारक और कार्यक्रम संयोजक डॉ. सतीश शास्त्री ने प्रणत को सम्मानित किया। यहां प्रणत द्वारा अपने पिता डॉ. दिलीप धींग के सहयोग से लिखे हिन्दी विषयक तीन मुक्तक प्रस्तुत हैं-

(एक)

संस्कृत और प्राकृत की बेटी है हिंदी।
भाषाओं में एवरेस्ट की चोटी है हिंदी।
आन, बान और शान भारतवर्ष की,
कहीं आस्था तो कहीं रोटी है हिंदी।

(दो)

धरा पर हिंदी है, आकाश में हिंदी है।
निशा में, दिन के प्रकाश में हिंदी है।
ज्येष्ठ भगिनी है भारतीय भाषाओं की,
आस में, श्वांस में, विश्वास में हिंदी है।

(तीन)

जन-गण-मन का आह्वान हिंदी है।
भारतीय भाषाओं का सम्मान हिंदी है।
बोलते, लिखते और समझते बहुजन,
सीखिये! बहुत ही आसान हिंदी है।

दो नई तितलियों की प्रजातियों की खोज

उदयपुर (विज्ञप्ति)। देशभर में तितलियों को गिनने, समझने व संरक्षण की मुहिम को आमजन तक ले जाने के लिए 'बिग बटरफ्लाई मंथ' में पर्यावरण व जैव विविधता संरक्षण के लिए कार्य कर रहे दो पर्यावरण वैज्ञानिकों ने राजस्थान में तितलियों की दो नई प्रजातियों को ढूंढने में सफलता प्राप्त की है।

टाइगर वॉच के फील्ड बॉयोलोजिस्ट डॉ. धर्मेन्द्र खांडल एवं दक्षिण राजस्थान में जैवविविधता संरक्षण के लिए कार्य कर रहे पर्यावरण वैज्ञानिक डॉ. सतीश शर्मा ने राज्य के सवाई माधोपुर के रणथम्भौर बाघ परियोजना क्षेत्र के बाहरी भाग में दो तितलियों की प्रजातियों को खोजा है। डॉ. शर्मा ने बताया कि उनके द्वारा राजस्थान की सुंदर तितलियों में शुमार दक्खन ट्राई कलर पाइड फ्लेट (कोलाडेलिया इन्द्राणी इन्द्रा) तथा स्पॉटेड स्माल फ्लेट (सारंगेसा पुरेन्द्र सती) नामक दो नई तितलियों को खोजा गया है जो हेसपेरीडी कुल की सदस्य हैं। कोलाडेनिया इन्द्राणी इन्द्रा के पंखों की ऊपरी सतह सुनहरी पीले रंग की, पहली जोड़ी पंखों के बाहरी कोर पर काले बॉर्डर वाले चार-चार अर्द्ध पारदर्शक सफेद धब्बे होते हैं। अन्य दो-दो छोटे-छोटे धब्बे विद्यमान रहते हैं। पिछली जोड़ी पंखों पर काले धब्बे होते हैं। तितली का धड़, पेट व टांगे पीली तथा आंखें काली होती हैं। पंखों के काले कोर थोड़े-थोड़े अंतरालों पर सफेद धब्बे, पिछले पंखों पर ज्यादा सफेद धब्बे ज्यादा होते हैं। यह तितली बंगाल, केरल, हिमाचल प्रदेश, उत्तरी-पूर्वी भारत, छतीसगढ़, जम्मू एवं कश्मीर, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु एवं उत्तराखण्ड के बाद राजस्थान में भी दिखाई दी है।

सारंगेसा पुरेन्द्र सती तितली भूरे-काले रंग पर सफेद धब्बों के बिखरे पैटर्न से बहुत आकर्षक लगती है। इसकी श्रृंगिकाएं सफेद रंग की लेकिन शीर्ष कालापन लिए होता है। यह सवाई माधोपुर, करौली, बूंदी व टौंक जिलों में विद्यमान है।

खरपतवार के बीच दिखा दुर्लभ चिड़िया का परिवार

उदयपुर (विज्ञप्ति)। सज्जनगढ़ वन्य जीव अभ्यारण में जैव विविधता को बचाने के लिए चल रहे पुलिस आईजी बिनीता ठाकुर के 'आपरेशन लेंटाना' अभियान के दौरान पुलिसकार्मिकों व पर्यावरणप्रेमियों द्वारा श्रमदान करते वक्त खरपतवार लेंटाना की झाड़ियों के बीच रूंझिया के पेड़ पर घोंसलें में दुर्लभ चिड़िया का एक परिवार दिखाई दिया।

पक्षी विशेषज्ञ विनय दवे एवं उज्जवल दाधीच को दुर्लभ पक्षी व्हाइट बेलीड मिनीवेट के मादा एवं नर अपने बच्चों के साथ अटखेलियां एवं उनको कीट पतंगों की फिडिंग करते दिखाई दिये। नर मिनीवेट का ऊपरी शरीर काले रंग का, गर्दन में एक गोल नारंगी पैच जिसमें बाकी हिस्से सफेद रंग के होते हैं। नारंगी दुम और पंखों पर सफेद निशान इसे और आकर्षक बनाते हैं। मादा दिखने में सुस्त और उसका शरीर गहरे भूरे रंग का होता है। वह छोटे पादप फूल एवं कीड़ों को भोजन बनाती है।

सुधीर विद्यार्थी को नन्दवाना स्मृति सम्मान

चित्तौड़गढ़। स्वतंत्रता सेनानी रामचन्द्र नन्दवाना के जन्म शताब्दी वर्ष में संभावना संस्थान द्वारा उनकी स्मृति में अध्यक्ष डॉ. के. सी. शर्मा ने बरेली निवासी सुधीर विद्यार्थी की कृति 'क्रांतिकारी आन्दोलन : एक पुनर्पाठ' को पुरस्कृत करने की घोषणा की। प्रो. काशीनाथसिंह, राजेश जोशी और डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल की चयन समिति ने इस कृति को पुरस्कार के योग्य पाया। डॉ. शर्मा ने बताया कि लेखक को ग्यारह हजार रुपये, शॉल और प्रशस्ति पत्र भेंट किया जाएगा।

- डॉ. कनक जैन

सक्का की कलाकृतियां इण्डिया बुक में दर्ज

उदयपुर (विज्ञप्ति)। शहर के स्वर्ण शिल्पकार इकबाल सक्का द्वारा स्वर्ण निर्मित सूक्ष्मतम कलाकृतियां इण्डिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड 2020 के संस्करण में दर्ज की गई हैं। दस मिलीग्राम सोने से निर्मित इन कलाकृतियों में क्रिकेट वर्ल्डकप ट्राफी, क्रिकेट बेट व बॉल की कृति दशाई गई है। बुक के मुख्य सम्पादक बी. आर. चौधरी ने हरियाणा स्थित भारतीय कार्यालय से सक्का को इस उपलब्धि के लिए वाहन स्टीकर व बैज भेजकर सम्मानित किया है।

नयी शिक्षा नीति : एक सिंहावलोकन

-प्रो. शूरवीरसिंह भाणावत -

केन्द्र सरकार की यूनियन कैबिनेट ने 29 जुलाई को नई शिक्षा नीति 2020 को स्वीकृति प्रदान की। इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि राज्य सरकारें कितना सहयोग करती हैं।

इस शिक्षा नीति का मूल उद्देश्य छात्रों में रटने की प्रवृत्ति को विकसित करने के बजाय उनमें अंतर्निहित क्षमता का उपयोग करते हुए कौशल विकास पर जोर देना है। इसके अनुसार शिक्षा प्रणाली ऐसी होनी चाहिए जो छात्रों में क्रिटिकल थिंकिंग के माध्यम से गहन शोध एवं सीखने की उत्सुकता को विकसित करने में सक्षम हो। अत: पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया पूछताछ, खोज-परक, विचार-विमर्श एवं विश्लेषण पर आधारित होनी चाहिए तथा आवश्यक पाठ्यक्रम कंटेंट को भी सीमित किया जाना चाहिये। अनुदान स्कूलों को देने की बजाय बच्चों को दिया जाये और मासिक स्कॉलरशिप 12वीं तक जारी रहे।

इस शिक्षा नीति का मूल उद्देश्य छात्रों में रटने की प्रवृत्ति को विकसित करने के बजाय उनमें अंतर्निहित क्षमता का उपयोग करते हुए कौशल विकास पर जोर देना है। इसके अनुसार शिक्षा प्रणाली ऐसी होनी चाहिए जो छात्रों में क्रिटिकल थिंकिंग के माध्यम से गहन शोध एवं सीखने की उत्सुकता को विकसित करने में सक्षम हो। अत: पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया पूछताछ, खोज-परक, विचार-विमर्श एवं विश्लेषण पर आधारित होनी चाहिए तथा आवश्यक पाठ्यक्रम कंटेंट को भी सीमित किया जाना चाहिये।

छात्रों में छठी कक्षा के बाद ही कौशल का विकास होना चाहिये ताकि वे स्वरोजगार पाकर आत्मनिर्भर भारत के सपने को पूरा कर सकें। मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में प्रारंभिक शिक्षण होना चाहिए। छात्र नई चीजों को अपनी मातृभाषा में त्वरित गति से सीखता है। निसंदेह ऐसी कई अच्छी बातों को इस शिक्षा नीति में समावेश करने का प्रयास किया गया है। मुख्य उद्देश्य यही है कि शिक्षा इस तरह से दी जाये जिससे विद्यार्थियों में ज्ञान का विकास, चरित्र निर्माण एवं कौशल विकास का समानुपातिक मिश्रण हो।

इसके आलावा कई अच्छी बातों का भी समावेश किया गया। मसलन छात्रों के ड्रॉप आउट अनुपात को कम करना, ग्रॉस एनरोलमेंट अनुपात को 2.63 प्रतिशत से बढ़ाकर 50 प्रतिशत करना, 3 वर्ष के बच्चों को नर्सरी में प्रवेश, विद्यार्थियों को अपने पसंद से विषयों के चयन की सुविधा, विज्ञान, वाणिज्य एवं कला संकाय के बीच का विभेद समाप्त करना, स्कूल कॉम्प्लेक्स का निर्माण करना आदि।

किंतु कुछ आधारभूत बातों की उपेक्षा इस नीति में की गयी है उनका विश्लेषण करना सार्थक होगा। असली सवाल शिक्षा की गुणवत्ता का है। गुणवत्ता की दृष्टि से हम विश्व के अन्य देशों से पिछड़े हुए हैं। प्रोग्राम फॉर इंटरनेशनल स्टूडेंट एसेसमेंट एक अंतर्राष्ट्रीय टेस्ट है जिसमें 74 देशों के बीच भारतीय बच्चों का 73वां स्थान है लेकिन इसने शिक्षा नीति के मसौदे के अंतर्गत गुणवत्ता को विकसित करने के लिए शिक्षक को 50 घंटे लगातार प्रोफेशनल डेवलपमेंट में भाग लेने के अतिरिक्त कोई विशेष विवेचना नहीं की गई है। वर्तमान शिक्षापद्धति की कमियों पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षा पर किये गये खर्च, वसूल किये गये टैक्स एवं कीमत पर निर्भर करती हैं। भाषायी बहस तो इन मूल तथ्यों से भटकाने का सरकारी प्रयास मात्र है। शिक्षा नीति में कही गई बातों को असली जामा पहनाने के लिए जिस इंफ्रास्ट्रक्चर की आवश्यकता होगी वह कहां से आएगा। इस बारे में स्पष्टता का अभाव है।

वर्तमान में सरकारी शिक्षण संस्थानों में आधारभूत व्यवस्थाओं का भी अभाव है। परिणामस्वरूप इस नीति में कही गई बातें दिवास्वप्न जैसी लगती हैं। किसी भी नई नीति को लागू करने में वित्त की बड़ी भूमिका होती है किंतु सरकार शिक्षा के ऊपर उतना खर्च नहीं कर पाती जितना करना चाहिए। सरकार ने इस नीति में जीडीपी के 6 प्रतिशत तक खर्च करने की बात कही है जो वर्तमान में 3 प्रतिशत के आसपास है। सरकार एक तरफ खर्च बढ़ाने की बात कर रही है वहीं दूसरी तरफ वास्तविक स्थिति में खर्च को घटा रही है।

यदि हम सरकार द्वारा शिक्षा पर किए गए कुल खर्चों की बात करें तो उसका पिछले कुछ वर्षों में इसका हिस्सा 4.14 प्रतिशत से घटकर 3.4 प्रतिशत रह गया है। सरकार ने 2020-21 के लिए शिक्षा पर 99,300 करोड़ रुपए बजट प्रावधान किया है और 3,000 करोड़ रुपए कौशल विकास के नाम पर रखे हैं किंतु यह राशि अपर्याप्त लगती है। वर्तमान में यूनिफाइड डिस्ट्रिक्ट इंफॉर्मेशन सिस्टम फॉर एजुकेशन के अनुसार स्कूल में 25 करोड़ बच्चे एवं हायर एजुकेशन में 3.8 करोड़ बच्चे पढ़ रहे हैं। यदि इस बजट का आवंटन इन बच्चों पर किया जाए तो प्रति छात्र आवंटन 3500 रूपये प्रति वर्ष आता है। इसमें से भी काफी बड़ा हिस्सा वेतन बिल चुकाने में और मिड डे मील में चला जाता है। बच्चों पर बहुत मामूली खर्च किया जाता है। वहीं अमेरिका में 3,000 डॉलर प्रति छात्र और मेक्सिको में 3,300 डॉलर प्रति छात्र खर्च किया जाता है।

सरकार शिक्षा के नाम पर करदताओं से एजुकेशन टेक्स भी वसूल करती है। 2014 से 2019-20 के बीच शिक्षा टेक्स से लगभग 4,25,000 करोड़ रुपए वसूला गया और जब सीएजी ने सरकार से यह सवाल पूछा कि इस राशि का खर्च कहां हुआ है तो सरकार निरुत्तर है। इस प्रकार सरकारी शिक्षा के नाम से वसूल की गई राशि भी शिक्षा पर खर्च नहीं हो पा रही है। परिणामस्वरूप सरकारी विद्यालयों की गुणवत्ता पर प्रश्नचिन्ह उठने लगे हैं। आम व्यक्ति प्राइवेट संस्थाओं की ओर जाने के लिए मजबूर है। इस प्रकार शिक्षा-तंत्र दोहरा शोषण करता है। पढ़ाई बेहतर करने के लिए हम सरकार को टैक्स देते हैं और वहीं बच्चों को महंगी फीस पर निजी स्कूल में पढ़ाते हैं।

अनुदान स्कूलों की बजाय बच्चों को मिले :

सरकारी शिक्षा पर अधिकांश खर्चा राज्यों को करना होता है। बजट के अभाव में ये राज्य शिक्षकों की नियमित नियुक्ति की बजाय ठेके पर नियुक्ति को प्राथमिकता देते हैं लेकिन किसी भी सरकार ने यह प्रयास नहीं किया कि शिक्षकों के वेतन के लिए एक अलग से राष्ट्रीय कोष स्थापित किया जाए ताकि कंगाल होती राज्य सरकारें शिक्षकों को नियमित वेतन का भुगतान कर सकें। बेहतर होगा की अनुदान स्कूलों को देने की बजाय बच्चों को दिया जाये ताकि अभिभावक अपनी पसंद के किसी भी स्कूल में उस बच्चे को दाखिला दिला सकें और अनुदान मासिक स्कॉलरशिप के रूप में 12वीं तक जारी रहे। इससे भ्रष्टाचार पर काफी हद तक अंकुश लगाया जा सकेगा। संस्थाओं को दिये जाने वाले अनुदान में अनियमितताओं के कई उदाहरण देखने को मिलते हैं। वर्तमान में जब प्रत्येक बच्चे को अनुदान दिया जाएगा तो वह अपनी इच्छानुसार जिस स्कूल में दाखिला लेगा और वह अनुदान उस स्कूल को मिलेगा जिससे स्कूल शिक्षकों के वेतन का भुगतान व अन्य खर्च कर सकेंगे।

नई शिक्षा नीति में संस्कृति की रक्षा की बात पुरजोर से उठायी गयी है और हमारे पुरातन ज्ञान प्रणाली को संजोए रखने का प्रयास किया गया है। यह एक अच्छी बात है, किंतु इसमें सरकार की दोहरी नीति उजागर होती है। एक तरफ हम संस्कृति की रक्षा की बात कर रहे हैं दूसरी तरफ इसी जून महीने में सरकार ने विश्व बैंक के 50 करोड़ डॉलर के शिक्षा कर्ज कार्यक्रम प्रस्तुत किए हैं। इसके तहत छह प्रमुख राज्यों में शिक्षण सामग्री और स्कूली व्यवस्थाओं के कार्यक्रम सीधे विश्व बैंक की निगरानी में बनेंगे। ऐसी स्थिति में हमारी पुरातन संस्कृति की रक्षा हो पाएगी, संदेह उत्पन्न होता है।

वर्तमान शिक्षा पद्धिति की कमियां नजर अंदाज :

नई शिक्षा नीति का प्रारूप निर्धारित करने से पहले वर्तमान शिक्षा पद्धति में क्या कमियां हैं, इसको अनुसंधान एवं आंकड़ों के माध्यम से प्रस्तुत नहीं किया गया और उनके समाधान भी प्रस्तुत नहीं किए। वर्तमान में पूरा शिक्षा तंत्र कई समस्याओं से घिरा हुआ है जैसे सरकारी स्कूलों में 25 प्रतिशत शिक्षक प्रतिदिन अनुपस्थित रहते हैं। उपस्थित शिक्षकों में से केवल 50 प्रतिशत शिक्षक ही कक्षा में पढ़ाते हैं। पांचवी कक्षा का विद्यार्थी कक्षा 2 के गणित के सवाल हल नहीं कर सकता। कई राज्यों में 10 प्रतिशत से भी कम शिक्षकों ने शिक्षक-पात्रता परीक्षा पास कर रखी है। सरकारी स्कूलों से प्राइवेट स्कूलों में छात्रों का पलायन आदि। ऐसे कई तथ्यों की उपेक्षा इस नई नीति में की गयी है। सरकार को चाहिये कि एक व्हाइट पेपर प्रकाशित करे जिसमें इस बात का उल्लेख हो कि नई शिक्षा नीति के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए रोड मैप क्या होगा साथ ही वर्तमान की कमियों का विश्लेषण कर उनका समाधान प्रस्तुत हो तो बेहतर रहेगा।

आधुनिक शिक्षापद्धति पर राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने बहुत पहले ही लिखा था-

आधुनिक शिक्षा किसी विध प्राप्त भी यदि कर सको।
तो लाभ क्या बस क्लर्क बनकर पेट अपना भर सको।।
लिखते रहो जो सर झुका सुन अफसरों की गालियां।
तो दे सकेंगी रात को दो रोटियां घरवालियां।।

हिन्दी दिवस या अंग्रेजी हटाओ दिवस

-डॉ. वेदप्रताप वैदिक-

भारत सरकार को हिंदी दिवस मनाते-मनाते 70 साल हो गए लेकिन कोई हमें बताए कि सरकारी काम-काज या जन-जीवन में हिंदी क्या एक कदम भी आगे बढ़ी? इसका मूल कारण यह है कि हमारे नेता नौकरशाहों के नौकर हैं। वे दावा करते हैं कि वे जनता के नौकर हैं। चुनावों के दौरान जनता के आगे वे नौकरों से भी ज्यादा दुम हिलाते हैं लेकिन ज्यों ही चुनाव जीतकर कुर्सी पर बैठते हैं, नौकरशाहों की नौकरी बजाने लगते हैं। भारत के नौकरशाह हमारे स्थायी शासक हैं। उनकी भाषा अंग्रेजी है। देश के कानून अंग्रेजी में बनते हैं, अदालतें अपने फैसले अंग्रेजी में देती हैं, ऊंची पढ़ाई और शोध अंग्रेजी में होते हैं। अंग्रेजी के बिना आपको कोई ऊंची नौकरी नहीं मिल सकती। क्या हम हमारे नेताओं और सरकार से आशा करें कि हिंदी-दिवस पर उन्हें कुछ शर्म आएगी और अंग्रेजी के सार्वजनिक प्रयोग पर वे प्रतिबंध लगाएंगे? यह सराहनीय है कि नई शिक्षा नीति में प्राथमिक स्तर पर मातृभाषाओं के माध्यम को लागू किया जाएगा लेकिन उच्चतम स्तरों से जब तक अंग्रेजी को विदा नहीं किया जाएगा, हिंदी की हैसियत नौकरानी की ही बनी रहेगी।

हिंदी-दिवस को सार्थक बनाने के लिए अंग्रेजी के सार्वजनिक प्रयोग पर प्रतिबंध की जरुरत क्यों है? इसलिए नहीं कि हमें अंग्रेजी से नफरत है। कोई मूर्ख ही होगा जो किसी विदेशी भाषा या अंग्रेजी से नफरत करेगा। कोई स्वेच्छा से जितनी भी विदेशी भाषाएं पढ़ें, उतना ही अच्छा! मैंने अंग्रेजी के अलावा रुसी, जर्मन और फारसी पढ़ी लेकिन अपना अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का पीएच.डी. का शोधग्रंथ हिंदी में लिखा। 55 साल पहले देश में हंगामा हो गया। संसद ठप्प हो गई, क्योंकि दिमागी गुलामी का माहौल फैला हुआ था। आज भी वही हाल है। इस हाल को बदलें कैसे?

हिंदी-दिवस को सारा देश अंग्रेजी-हटाओ दिवस के तौर पर मनाए! अंग्रेजी मिटाओ नहीं, सिर्फ हटाओ! अंग्रेजी की अनिवार्यता हर जगह से हटाएं। उन सब स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयों की मान्यता खत्म की जाए, जो अंग्रेजी माध्यम से कोई भी विषय पढ़ाते हैं। संसद और विधानसभाओं में जो भी अंग्रेजी बोले, उसे कम से कम छह माह के लिए मुअत्तिल किया जाए। यह मैं नहीं कह रहा हूं। यह महात्मा गांधी ने कहा था।

सारे कानून हिंदी और लोकभाषाओं में बनें और अदालती बहस और फैसले भी उन्हीं भाषाओं में हों। अंग्रेजी के टीवी चैनल और दैनिक अखबारों पर प्रतिबंध हो। विदेशियों के लिए केवल एक चैनल और एक अखबार विदेशी भाषा में हो सकता है। किसी भी नौकरी के लिए अंग्रेजी अनिवार्य न हो। हर विश्वविद्यालय में दुनिया की प्रमुख विदेशी भाषाओं को सिखाने का प्रबंध हो ताकि हमारे लोग कूटनीति, विदेश व्यापार और शोध के मामले में पारंगत हों। देश का हर नागरिक प्रतिज्ञा करे कि वह अपने हस्ताक्षर स्वभाषा या हिंदी में करेगा तथा एक अन्य भारतीय भाषा जरुर सीखेगा। हम अपना रोजमर्रा का काम—काज हिंदी या स्वभाषाओं में करें। भारत में जब तक अंग्रेजी का बोलबाला रहेगा याने अंग्रेजी महारानी बनी रहेगी तब तक आपकी हिंदी नौकरानी ही बनी रहेगी।

सिडबी का राज्य सरकार से करार

उदयपुर (विज्ञप्ति)। भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) ने राज्य में एमएसएमई पारितंत्र को विकसित करने के लिए राजस्थान सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन निष्पादित किया है। परसादीलाल मीणा, कैबिनेट मंत्री, उद्योग एवं उद्यम, नरेशपाल गंगवार, आईएएस, प्रमुख सचिव, उद्योग और एमएसएमई की उपस्थिति में अर्चना सिंह, आईएएस, उद्योग आयुक्त और बलबीर सिंह, महाप्रबंधक, सिडबी ने हस्ताक्षर किए।

सिडबी के उप-प्रबंध निदेशक वी सत्य वेंकटराव ने कहा कि समझौते के तहत सिडबी द्वारा राजस्थान सरकार के साथ एक परियोजना प्रबंधन इकाई (पीएमयू) स्थापित की जाएगी। पीएमयू की भूमिका ईक्विटी समर्थन, ब्याज सबवेंशन, दबावग्रस्त एमएसएमई इकाइयों के समाधान, एमएसएमई उद्यमियों को सहयोग करने और एमएसएमई इकाइयों की मौजूदा स्थिति के मूल्यांकन के आधार पर अन्य आवश्यकता-आधारित हस्तक्षेप को सुसाध्य बनाने की होगी। प्रयोगिक चरण में हमने 11 राज्यों में पीएमयू स्थापित करने के लिए एक विशेषज्ञ एजेंसी की नियुक्ति की है।

रॉकी और मयूर ने राजस्थान में की रोड ट्रिप

उदयपुर (विज्ञप्ति)। ओयो ने अपना रोड ट्रिपिन कैंपेन #DekhoApnaDesh के तहत लॉन्च किया है। कैंपेन के तहत, दुनिया की लीडिंग हॉस्पिटैलिटी चैन ने रोड ट्रिप के लिए जाने माने रॉकी और मयूर के साथ हाथ मिलाया है। इसका उद्देश्य उन यात्रियों को प्रेरित करना है जो महीनों के बाद अपने घरों से बाहर निकलने की इच्छा रखते हैं। इस कैंपेन के तहत, रॉकी और मयूर ने उदयपुर, जयपुर, अजमेर, माउंटआबू, चित्तौड़गढ़, बूंदी, और पुष्कर सहित राजस्थान के दर्शनीय स्थानों पर 14-दिवसीय रोड ट्रिप किया। दोनों उदयपुर में ओयो की सुन्दर प्रॉपर्टी कैपिटल ओ 66699 बड़ी ग्रह रिसोर्ट एंड स्पा में रहे। यहां उन्होंने ओयो की सेनिटाइज्ड स्टेस पहल, न्यूनतम टच पॉलिसी, डिजिटल चेक-इन, चेक-आउट और बेहतर स्वच्छता का अनुभव किया और अपनी यात्रा के वि-लॉग को इंस्टाग्राम, यूट्यूब, ट्विटर और फेसबुक पेजों पर भी डाला। ओयो में ग्लोबल ब्रांड के हेड मयूर होला ने कहा कि रॉकी और मयूर के साथ ओयो की सैनिटाइज्ड स्टेस को हाइलाइट करेंगे और पार्टनर्स और कर्मचारियों के साथ मेहमानों को परिचित कराएंगे।

होम डिलीवरी में 200 प्रतिशत का उछाल

उदयपुर (विज्ञप्ति)। एमवे इंडिया ऑनलाइन ऑर्डर्स में वृद्धि को सुगम बनाने के लिए होम डिलीवरी (एचडी) और लॉजिस्टिक्स नेटवर्क को आगे बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित कर रही है। एमवे इंडिया के सीईओ अंशु बुधराजा ने कहा कि एमवे की 10 साल की विकास दृष्टि के हिस्से के तौर पर सामाजिक वाणिज्य के उभरते हुए रुझान के साथ मिलकर उद्यमिता की शक्ति को उन्मुक्त करने पर ध्यान केंद्रित करते हुए इस वैश्विक डायरेक्ट सेलिंग दिग्गज ने इस साल की शुरुआत में लक्षित परिणामों को आगे बढ़ाने के लिए ऑफलाइन-टू-ऑनलाइन को एकीकृत करना शुरू कर दिया था। कंपनी ने ऑनलाइन बिक्री में एक महत्वपूर्ण बदलाव देखा है, जो कि फरवरी 2020 में 33.6 प्रतिशत से बढ़कर वर्तमान में 70 प्रतिशत हो गया है। एमवे को इस प्रवृत्ति के जारी रहने की उम्मीद है और इस साल के अंत तक ऑनलाइन ऑर्डर 5-6 लाख प्रति माह तक पहुंचने की उम्मीद है।

इंवेस्को इंडिया फोकस्ड 20 इक्विटी फंड का अनावरण

उदयपुर (विज्ञप्ति)। इंवेस्को म्यूचुअल फंड ने अपना नया फंड इंवेस्को इंडिया फोकस्ड 20 इक्विटी फंड लॉन्च किया।

सीईओ सौरभ नानावटी ने कहा कि इंवेस्को इंडिया फोकस्ड 20 इक्विटी फंड बाजार पूंजीकरण रेंज में स्थानांतरित करने के लिए लचीलेपन के साथ 20 शेयरों तक में निवेश करके पूंजी का अधिमूल्यन उत्पन्न करना चाहता है। वर्तमान में पोर्टफोलियो के बड़े हिस्से को लार्ज-कैप स्टॉक लगभग 50 प्रतिशत से 70 प्रतिशत के बीच में निवेश किया जाएगा। मिडकैप स्टॉक्स पर एक्सपोजर 30 प्रतिशत से 50 प्रतिशत के दायरे में होगा, जबकि स्मॉल-कैप स्टॉक्स के लिए एक्सपोजर पोर्टफोलियो के 0 से 20 प्रतिशत में होगा। इसके अलावा, पोर्टफोलियो में वृद्धि और मूल्य स्टॉक दोनों शामिल होंगे। फंड एसएंडपी बीएसई 500 टीआरआई पर बेंचमार्क किया जाएगा। फंड का प्रबंधन ताहिर बादशाह द्वारा किया जाएगा, जिनके पास भारतीय इक्विटी बाजारों में काम करने का 26 वर्षों से अधिक का अनुभव है।

मुख्यमंत्री से माह भर मुलाकात के कार्यक्रम स्थगित

जयपुर (सुजस)। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि कोविड-19 महामारी के संकट के दौर में प्रदेशवासियों के जीवन की रक्षा सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसके लिए राज्य सरकार द्वारा चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार एवं सुदृढ़ीकरण के साथ ही हरसंभव प्रयास जारी हैं लेकिन इसके संक्रमण को सबकी भागीदारी से ही रोका जा सकता है।

उन्होंने प्रदेशवासियों से मास्क लगाने, सोशल डिस्टेंसिंग रखने, भीड़ से बचने, सामाजिक मेल-जोल कम से कम रखने, आवश्यकता होने पर ही घर से निकलने और अन्य सभी हैल्थ प्रोटोकॉल की पूरी पालना करने की अपील करते चिकित्सकों की सलाह के अनुसार आगामी एक माह तक आमजन सहित अन्य सभी लोगों से मुलाकात नहीं करने का निर्णय लिया है। गौरतलब है कि गत दिनों मुख्यमंत्री निवास एवं कार्यालय में भी लगभग 40 कार्मिक तथा मुख्यमंत्री सुरक्षा से जुड़े पुलिसकर्मी एवं आरएसी के जवान कोरोना संक्रमित पाए गए थे।

जिंक सम्मानित

उदयपुर (विज्ञप्ति)। हिंदुस्तान जिंक के पंतनगर मेटल प्लांट को फ्रॉस्ट एंड सुलिवन सस्टेनेबिलिटी अवार्ड्स में चैलेंजर्स अवार्ड - मीडियम बिजनेस, प्रोसेस सेक्टर एवं सेफ्टी एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार वर्चुअल इंडिया सस्टेनेबिलिटी लीडरशिप समिट में फ्रॉस्ट एंड सुलिवन और टीईआरआई ने पंतनगर मेटल प्लांट के हेड ओ एंड एम हिमांशु छाबड़ा को प्रदान किया।

एनएसडीएल पेमेंट्स बैंक एवं आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ में साझेदारी

उदयपुर (विज्ञप्ति)। आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस ने एनएसडीएल पेमेंट्स बैंक के साथ समझौता किया है। आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस के सीईओ एनएस कन्नन ने कहा कि इसके तहत आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ एनएसडीएल पेमेंट्स बैंक के ग्राहकों को अपने ग्राहक-केंद्रित सुरक्षा और बचत उत्पाद प्रदान करेगा। ये बीमा उत्पाद एनएसडीएल पेमेंट्स बैंक ग्राहकों को अपने परिवार को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करने में मदद करेंगे ताकि उन्हें अपने वित्तीय लक्ष्य प्राप्त करने में मदद मिल सके। शुरुआत 'आई प्रोटेक्ट स्मार्ट', और 'आईसीआईसीआई प्रु एएसआईपी' से की जाएगी।

700 लोगों ने किया काढ़े का सेवन

उदयपुर (विज्ञप्ति)। कंचन सेवा संस्थान द्वारा भामाशाह एडवोकेट फतहलाल नागोरी के सहयोग से नि:शुल्क काढ़ा वितरण शिविर का आयोजन कोर्ट परिसर में किया गया। इसमें 700 लोगों ने काढ़े का सेवन किया। मुख्य अतिथि एडीजे (5) के न्यायाधीश राजपाल सिंह थे। अध्यक्षता पूर्व विधानसभा अध्यक्ष शांतिलाल चपलोत ने की। अति विशिष्ट अतिथि रतनसिंह राव तथा श्यामसुन्दर शर्मा थे जबकि विशिष्ट अतिथि राजेश नागोरी, बार अध्यक्ष मनीष शर्मा, चक्रवर्तीसिंह राव, भरत वैष्णव व भरत जोशी थे। संचालन वैभव नागोरी ने किया।

डॉ. छैल बिहारी शर्मा ने कोरोनाकाल में कैसे अपने आप को सुरक्षित रखे पर विचार व्यक्त किए। शिविर में डॉ. काननबाला लोढ़ा, एम.एस. मोगरा, जीवनसिंह ने अपनी सेवाएं दीं।

ओया की छात्रों के लिए छूट

उदयपुर (विज्ञप्ति)। दुनिया की अग्रणी हॉस्पिटैलिटी चैन ओयो ने नेशनल एंट्रेंस एक्साम्स के साथ-साथ राज्य की परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रों के लिए अपने ऐप और वेबसाइट पर छूट प्रदान की है। सीईओ रोहित कपूर ने कहा कि शिक्षा मंत्रालय और स्थानीय सरकार के अधिकारियों के प्रति अपने समर्थन व इस मुहीम में सहयोग करने हेतु माता-पिता, अभिभावकों और छात्रों को सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण आवास की सुविधा प्रदान करने के लिए, ओयो ने एक ईमेल हेल्पलाइन students_stay@oyorooms.com स्थापित किया है। ओयो का यह प्रयास कोविड-19 के कारण उत्पन विभिन्न अनिश्चितताओं और चुनौतियों से निपटने वाले बड़े समुदाय की सेवा करने का एक हिस्सा है। अपने प्रयासों से छात्रों का समर्थन करने के लिए, केंद्रीय शिक्षामंत्री, डॉ. रमेश पोखियाल 'निशंक' ने स्थानीय सरकारी अधिकारियों से इन आकांक्षाओं का समर्थन करने की अपील की।

आदित्य पुरी लाईफटाईम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित

उदयपुर (विज्ञप्ति)। एचडीएफसी बैंक के एमडी, आदित्य पुरी को यूरोमनी अवार्ड्स ऑफ एक्सिलेंस, 2020 द्वारा लाईफटाईम अचीवमेंट अवार्ड प्रदान किया गया। यह पुरस्कार पाने वाले वे पहले भारतीय कॉर्पोरेट लीडर हैं।

यह सम्मान उन्हें बैंकिंग के क्षेत्र में अपने उल्लेखनीय करियर के लिए दिया गया। आदित्य पुरी ने कहा कि मैं अपने सभी स्टेकहोल्डर्स के योगदान की सराहना करता हूँ, जो इस सफर में हमारे साथ रहे। मैं उनमें से प्रत्येक की तरफ से इस सम्मान को स्वीकार करता हूँ। यह सफर उन सभी के योगदान के बिना संभव न हो पाता। मैग्जीन ने लिखा-'1994 से एचडीएफसी के निर्माण में आदित्य पुरी की सफलता को कुछ चीजों के न होने में मापा जा सकता है, जिनमें किसी घोटाले का न होना, किसी भी क्रेडिट के नुकसान तथा ड्रामा का न होना शामिल है। भारतीय बैंकिंग में आमतौर पर इन चीजों की कोई कमी नहीं। कभी क्रेडिटर बेईमानी कर जाते हैं, कभी जालसाजी व धोखाधड़ी के मामले सामने आते हैं और गिरफ्तारी के बाद जमानत का दौर चलता है लेकिन एचडीएफसी बैंक में ऐसा कोई मामला सामने नहीं आया और यह बैंक लगातार विकसित होता रहा।'

महिला मंडल को मिले दो सम्मान

उदयपुर (विज्ञप्ति)। अ.भा. तेरापंथ महिला मंडल के

45वें वर्चुअल वार्षिक राष्ट्रीय अधिवेशन में उदयपुर महिला मंडल को 'दस प्रत्याख्यान' कर्म निर्जरा महायज्ञ में सक्रिय सहभागिता पर विशिष्टतम योग्यता सम्मान तथा विश्व महिला दिवस पर आयोजित रैली में सक्रिय सहभागिता पर सर्वोत्तम योग्यता सम्मान मिला है। अध्यक्षा सुमन डागलिया ने कार्यकारिणी एवं सदस्यों का आभार व्यक्त किया। यह जानकारी मंत्री सीमा बाबेल ने दी।

अगले चुनाव में तीन गुना बहुमत से जीतेंगे मोदी

अमेरिकन ज्योतिषी की भविष्यवाणी के अनुसार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सन् 2024 में तीन गुना अधिक बहुमत से जीतेंगे। पीवीआर नरसिम्हा राव नामक ये ज्योतिषी जो अमेरिका के बोस्टर शहर में रहते हैं, पेशे से सॉफ्टवेयर इंजीनियर और 'जगन्नाथ होरा' मुफ्त ज्योतिष सॉफ्टवेयर के निर्माता हैं। ये भारतीय मूल के अमेरीकी नागरिक हैं जो आईआईटी मद्रास से इंजीनियरिंग में ग्रेज्युट हैं। इसके बाद उन्होंने हयुस्टन में राइस विश्वविद्यालय से मास्टर डिग्री ली।

कमाल की बात यह है कि नरसिम्हा राव दुनियां के बारे में कोरोना ईयर 2020 से लेकर अगले 15 वर्षों की भविष्यवाणी कर चुके हैं। पिछले 29 मार्च को उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि दुनियां में अगले ढाई साल अर्थात् 2023 तक आराजकता का समय देखा जायेगा। उसके बाद पुनर्निर्माण की प्रक्रिया 2023 के मध्य से शुरू होगी जो कि विश्व की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में 2034 तक का समय लेगी।

उनके अनुसार भारत सुपर पावर बनेगा। अब तक दुनियां में विश्व गुरु अमेरिका सुपर पावर की सर्वोच्चता खो देगा और चीन सोवियत रूस की तरह टूटकर बिखर जायेगा। भारत इस दौर में अग्रणीय राष्ट्र बनेगा। आने वाली शताब्दी और सह शताब्दी भारत की होगी जिसमें दुनियां भारत को एक नये सुपर पावर के रूप में देखेगी।

राव ने बताया कि मोदी अगला कार्यकाल भी जीतेंगे। राष्ट्रहित में मोदी कई साहसिक निर्णय लेंगे और 2022 से 2024 तक कई राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान करेंगे। तीसरे कार्यकाल के बीच में ही वे अपने एक सहयोगी को सत्ता सौंप देंगे और सार्वजनिक जीवन से संन्यास ले लेंगे।

- डी. जी. दत्ता, बीकानेर एक्सप्रेस 24 अगस्त से साभार

पत्रकारों के लिए मुख्यमंत्री ने खजाना खोला

जयपुर (सुजस)। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने पत्रकारों को रियायती दरों पर भूखंड आवंटित करने की योजना पर फिर से काम शुरू करने के निर्देश दिये हैं। बैठक में मुख्यमंत्री ने पत्रकार कल्याण कोष से पत्रकारों को गंभीर बीमारी में दी जाने वाली सहायता राशि को 1 लाख से बढ़ाकर 2 दो लाख करने का फैसला लिया। पहले केवल 6 गंभीर बीमारियों पर ही सहायता राशि मिलती थी। अब इस सीमा को हटाते हुए सभी गंभीर बीमारियों पर 2 लाख रूपये तक सहायता देने का फैसला लिया है।

मेडिकल डायरी योजना के तहत अब सभी पत्रकार दवाई ले सकेंगे। अब तक मेडिकल डायरी की सुविधा केवल अधिस्वीकृत पत्रकारों को ही मिलती रही। अब सभी पत्रकारों को मेडिकल डायरी योजना का लाभ देने के निर्देश दिये गये। यही नहीं, सरकार द्वारा अधिस्वीकृत पत्रकारों को प्रतिमाह दी जाने वाली पांच हजार रूपये की राशि को बढ़ाकर 10 हजार रूपया करने की स्वीकृति प्रदान की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पत्रकारिता जन सरोकार से जुड़ा सेवा का एक सशक्त माध्यम है। इसमें काम करने वाले लोगों के कल्याण की जिम्मेदारी राज्य सरकार की होनी चाहिए। उन्होंने राजस्थान संवाद को एक ऐसे इंटीग्रेटेड प्लेटफॉर्म के रूप में विकसित करने का सुझाव दिया कि जिससे सरकारी कामकाज के प्रचार-प्रसार के कार्यों की पहुंच गांव-ढाणी तक हो सके।

मुख्यमंत्री द्वारा प्रदत्त इन सुविधाओं के लिए पत्रकारों ने आभार व्यक्त करते हुए प्रशंसा की। उदयपुर जार के सदस्यों ने इसे लोकतंत्र की सशक्त भूमिका के लिए मुख्यमंत्रीजी को पत्रकारों के योगदान का प्रबल पक्षधर बताया।

प्रत्येक माह एक दिन के लिए एक बालिका जिला कलक्टर

उदयपुर (विज्ञप्ति)। 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' योजनान्तर्गत जिला स्तरीय बैठक में कलक्टर चेतन देवड़ा ने बालिकाओं को प्रोत्साहित करने के लिए नवाचार करते हुए कहा कि प्रत्येक माह प्रत्येक ब्लॉक से वंचित ग्राम पंचायतों से एक बालिका को एक दिन के लिए जिले का कलक्टर बनने का मौका मिलेगा। इससे बालिकाओं के मनोबल के साथ सशक्तिकरण को बढ़ावा मिलेगा।

महिला अधिकारिता उपनिदेशक संजय जोशी ने बताया कि जिले में बेटियों में सकारात्मक एवं सुरक्षात्मक वातावरण बनाने के लिए ब्लॉक स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली 10 बालिकाओं को सम्मानित किया जायेगा। शिक्षा-सेतु योजनान्तर्गत ड्राप आउट बालिकाओं को शिक्षा से जोड़ा जाकर बेहतर शिक्षा के लिए शिक्षा विभाग के आपसी समन्वयन से ब्लॉक स्तर पर शिक्षा कैम्प का आयोजन किया जायेगा। विभिन्न ग्राम पंचायतों के कलस्टर बनाकर विद्यालय जाने वाली बालिकाओं के लिए सामान्य ज्ञान एवं खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया जायेगा। साथ ही 10वीं एवं 12वीं कक्षा में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली 10-10 बालिकाओं एवं बालिका शिक्षा के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करने वाले 10 विद्यालयों को सम्मानित किया जायेगा।

जगपति! तुम हार गए

-बी.एल.माली 'अशांत'-

जगपति! तुम जीते नहीं, तुम हार गए।
तुम्हारे ताले लगे ,तुम नहीं बोले।
न भोग न आरती,
पुजारी भी घर से नहीं निकले
तुमने अपनी संकळाई नहीं दिखाई जगपति!
लुले-लंगड़े नहीं किए
तुम चुपचाप बैठे रहे मंदिर में,
लेकिन मैं नहीं बैठा
मैं सड़कों पर बहता रहा
मुझे जग ने देखा है
मेरे लिए जग बोला है
आपके लिए कोई नहीं जगपति, कोई नहीं
मैं भगवान नहीं हूं ,जगपति
धरती का पसीना हूं
मेरे लिए धरती कांपी
आप स्वयं कांपते रहे मूर्तिवत
जगपति! आप समझ गए होंगे
कि आदमी आदमी की परवाह करता है
मैंने हमेशा आपको याद किया है,
जगपति! मैं आपका पसीना हूं।

संझ्या की याद में......

(पृष्ठ एक का शेष)

पितरों को तृप्त करने के लिए कौओं को खिलाकर ऐसा माना जाता है कि ये ही पितरों तक भोजन पहुंचाकर उन्हें तृप्त करते हैं। एक गीत में -

संझ्या रे घर नूतो रे कागला
कांई कांई भात परूसूं रे कागला
लपसी रा लूंदा परूसूं रे कागला
ऊपर घी का झाग रे कागला।

कोट में ऊपर ही ऊपर एक ओर कौआ बनाया जाता है जिसे काले कपड़े से शृंगारा जाता है। दूसरी ओर कौए के सामने तोता बनाया जाता है जिसे हरे कपड़े से खूबसूरती दी जाती है। इसकी चोंच की जगह कहीं-कहीं मिर्ची तो कहीं लाल कपड़े की नोक लगाई जाती है।

कोट में रथ में बैठी संझ्या की विदाई का दृश्य बड़ा ही मनोहर ढंग से वर्णित है-

गुड़ गुड़ गुड़ल्यो गुड़तो जाय
जीमे म्हांका संझ्या बाई बैठ्या जाय
घाघरो घमकाता जाय
लूगड़ी चमकाता जाय
टोंकली भड़काता जाय
चुड़लो चमकाता जाय
नथड़ी भलकाता जाय
छोटी सी गाड़ी रूलकती जाय।

श्राद्ध पक्ष में ही वैष्णव मन्दिरों में भगवान के सम्मुख विभिन्न तरह की सांझी बनने का विधान है। ये संझ्याएं मुख्य रूप से ऊंची जमीन पर तरह-तरह के रंगों में भगवान कृष्ण की विविध लीलाओं की छवियां में दरसाई जाती हैं। जल की सांझी में तैलिय पानी भरे बर्तन पर लीला-स्टेंसिलों के माध्यम से रंगों की भुरकी देकर जो छवियां निखारी जाती हैं वे पानी पर तैरती अजीब आकर्षक नजारा प्रस्तुत करती हैं। नाथद्वारा के श्रीनाथजी मन्दिर में विशाल कमल चौक में पानी से तर सफेद कपड़े पर केले के पत्तों की लीला-कतरनों से भगवान श्रीकृष्ण से सम्बन्धित क्रीड़ाओं का दरसाव सर्वथा अनूठा आकर्षण देता दर्शकों को चकित किये रहता है।

हमारे जीवन पक्ष की ऐसी अनेक परम्पराएं हैं जिन्हें हम छोड़ते चले जा रहे हैं। उन्हें छोड़ने से हमारी मांगलिक, कलात्मक एवं रागात्मक प्रवृत्तियां कम होती हैं और जीवन शुष्क बन जाता है। ये परम्पराएं हमारे जीवन के कई उदात्त पक्षों की प्रतीक हैं। यदि ये नष्ट हो जायेंगी तो हमारे सांस्कृतिक जीवन की सभी कड़ियां टूट जायेंगी और पारिवारिक कलह, जातीय वैमनस्य, वैयक्तिक कुंठाएं, रूपये पैसे की हाय-हाय, पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष एवं जीवन की बोरियत बढ़ जायेगी।

लोकभाषाओं से हिंदी का गौरव

-डॉ. प्रभातकुमार सिंघल-

आधुनिक काल के नवजागरण के अग्रदूत प्रसिद्ध कवि भारतेंदु हरिश्चंद्र ने निज भाषा का महत्व बताते हुए लिखा-

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।
सब देसन से लै करहू, भाषा माहि प्रचार।।'

अर्थात निज यानी अपनी भाषा से ही उन्नति संभव है, क्योंकि यही सारी उन्नतियों का मूलाधार है। मातृभाषा के ज्ञान के बिना हृदय की पीड़ा का निवारण संभव नहीं है। विभिन्न प्रकार की कलाएँ, असीमित शिक्षा तथा अनेक प्रकार का ज्ञान, सभी देशों से जरूर लेना चाहिये, परन्तु उनका प्रचार मातृभाषा के द्वारा ही करना चाहिये। भारत के सांस्कृतिक और सामाजिक वैभव की स्थापना का प्रथम पायदान निज भाषा अर्थात मातृभाषा की शिक्षा में ही निहित है। बिना मातृभाषा के ज्ञान और अध्ययन के सब व्यवहार व्यर्थ ही माने गए हैं।

हिंदी दिवस पर यह चिंतन का विषय होना चाहिए, क्या हम आजादी के सात दशकों में भी अपनी राष्ट्रभाषा को लोकप्रिय कर पाये हैं। आज भी हिंदी के माथे की बिंदी को उसका ताज बनाने के लिए भागीरथी प्रयासों की जरूरत हैं।

देश आजाद हुआ, अंग्रेज चले गये पर अपने पीछे छोड़ गए मैकाले की शिक्षा पद्दति, जिससे आज तक हम मुक्त नहीं हो पाये हैं। आज भी बच्चों को अंगेजी पढ़ाने में माँ-बाप गर्व महसूस करते हैं और मातृभाषा हिंदी के प्रति तिरस्कार की भावना रखते हैं। कहते हैं बेटा अंग्रेजी पर ध्यान देना, हिंदी में तो बस पास होना है। वाह रे आज के माता-पिता! गुलामी की बू अब तक नहीं गई। अपनी मातृभाषा के प्रति तिरोहित होता इनका भाव।

समाज को दिशा देने वाले हमारे हिंदी समाचारपत्र खुद ही हिंदी के कातिल बन बैठे हैं। शब्द, शीर्षक ही नहीं, वाक्य तक रोमन अंगेजी में ज्यों के त्यों अपना लिए गए हैं।

कई बार महसूस होता है कि उन्हें अंग्रेजी शब्दों की हिंदी शब्दावली नहीं मिलती या वे अंग्रेजी शब्दों का उपयोग कर समाचारपत्र को ज्यादा प्रभावी या आधुनिक दिखाने का प्रयास करते हैं पर यह नहीं जानते कि वे हिंदी की हत्या कर देते हैं। सरकारी महकमों में कहने को तो हिंदी का प्रयोग आवश्यक किया गया है परंतु फ़इलों पर टिप्पणियां अंगेजी में दिखाई देती हैं। उच्च नौकरशाह हैं कि उनका अंग्रेजी मोह छूटता ही नहीं है।

संस्कृति भाषा और साहित्य से प्रसारित होती है। लोक बोलियां भारत माता की आवाज हैं। इन्हें प्रोत्साहन देने वाले सच्चे अर्थों में भाषा के लिए कार्य कर रहे हैं। बोलियां और उप बोलियां एक जगह होंगी तो ही नई शिक्षा नीति सफल होगी।

मातृभाषा में शिक्षण सामग्री के लिए काम करना होगा। लोक भाषाओं में अपार ज्ञान संपदा है जो उपेक्षा के कारण नष्ट हो रही हैं। लोक भाषा को प्रोत्साहन देकर लोकसाहित्य और कलाकारों को समाज द्वारा संरक्षण देना जरुरी है, लोक कलाकारों को बड़े कलाकारों जैसा सम्मान मिलना चाहिए। लोक बोली और मातृभाषा के लिए जो लोग कार्य कर रहे हैं उनको प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

कैसे-कैसे अजूबे विवाह (3)

शब्द रंजन के गत अंक में विवाह के सम्बन्ध में बड़ा ही दिलचस्प विवरण प्रकाशित किया गया था। उसी कड़ी में कुछ और रोचक विवरण द्रष्टव्य है-

(12) मोरबंधिया विवाह :

विधिवत विवाह में विवाह के सारे रीतिरिवाज तथा संस्कार सम्पूरित होते हैं। ऐसा विवाह 'मोरबंधिया' कहलाता है। इसमें प्रारम्भ में सगाई की रस्म होती है तब वर का पिता कन्या के घर रूपया-नारियल भेजता है। दोनों पक्षों के पंच तथा गांव का पटेल-मुखिया एकत्र होते हैं। वहीं दावत की व्यवस्था होती है। ऐसा विवाह चट मंगनी पट ब्याह की तरह सगाई होने के आठ दिन में ही करा दिया जाता है। यह दिन रवि या सोम का होता है।

(13) तनाणा विवाह :

एक विवाह वह होता है जिसमें न सगाई होती है न चंवरी होती है। न कोई ब्राह्मण वगैरह ही होता है। यह विवाह तनाणा विवाह कहलाता है। इसमें कोई पुरुष किसी महिला को भगाकर अपने घर ले आता है। स्त्री के माता-पिता को जब पता लगता है तो वह अपने सगे समधियों को लेकर उस पुरुष के घर पहुंचता है। वहां पंच इकट्ठा होते हैं। गांव का मुखिया सहलोत और पंच मिलकर जो दापा निश्चित करते हैं वह देना होता है। उसमें बारह बछड़े अथवा बारह वस्त्र होते हैं। यह दापा लड़की ले जाने वाले को लड़की के पिता की ओर से देना होता है।

(14) प्रेम विवाह :

गरासियों में बाल विवाह का प्रचलन नहीं है। इनमें विवाह प्राय: लड़के-लड़की की आपसी समझ, सहमति और सहकार से होते हैं। ऐसे विवाह प्रेम-विवाह कहलाते हैं। किशोरावस्था में पशु चराते समय या अन्य कार्य के दौरान जब ये जंगल में जाते हैं तो वहां युवक-युवती का आपसी मिलन होता है। यह मिलन एक-दूसरे को आकृष्ट करता हुआ अपनी ओर खींचता है और परिपक्व होता रहता है।

(15) सपन्या विवाह :

एक विवाह सपन्या विवाह होता है। कहते हैं कि हल्दी-पीठी लगाने के बाद लड़की को कहीं आने-जाने, घूमने-फिरने में बड़ी सावधानी बरतनी चाहिये। को टैम कहीं नहीं जाना चाहिये और हर समय लोहे की चीज साथ रखनी चाहिये। इसीलिए तेल चढ़ने के बाद लड़कियां अपने पास छोटा चाकू रखती हैं। यह समय ऐसा होता है जब कई तरह के दंदफंद लग जाते हैं जिससे लड़की को बड़ी परेशानी से गुजरना पड़ता है। यही स्थिति लड़के की भी होती है। वह भी अपने साथ चाकू-छुरी रखता है।

कभी-कभी पूरी सावधानी रखने पर भी ऐसी गड़बड़ी हो जाती है। शादी होने के पहले दिन से ही जब कोई भूत, प्रेत, दंदफंद लग जाता है तो चंवरी में वह फेरों के साथ सात फेरे खा लेता है। यह दंदफंद सपन्या होता है। विवाह के बाद जब लड़की सुसराल जाकर पुन: अपने पीहर लौट आती है उसके बाद उसकी इच्छा सुसराल जाने की नहीं रहती है। तब जबर्दस्ती उसे उसके माता-पिता भेजते हैं। कई बार विदा देकर माता-पिता जब घर लौटते हैं तो पीछे-पीछे उनकी लड़की भी चली आती है। ऐसी स्थिति में सारे गांव में यह हवा फैल जाती है। इससे लड़की के सुसराल वालों को भी कम परेशानी नहीं रहती है।

यह बात होते-होते यहां तक बढ़ती है कि दोनों पक्ष लड़की की ऐसी हरकतों से जहां परेशान रहते हैं वहां लड़की को भी वे परेशानी में डाल देते हैं। ऐसी स्थिति में यह भी देखा गया है कि लड़की घबराकर खुदकशी तक कर लेती है क्योंकि उसका कहीं ठौर ठिकाना नहीं रहता है और न उसे सहानुभूति विश्वास दिलानेवाला ही कोई होता है। तब कुछ समझेबुझे लोग उसकी छानबीन कर निष्कर्ष निकालते हैं कि शादी के समय चंवरी में ही उसके साथ सपन्ये ने शादी करली है। ऐसी स्थिति में दोनों वर-वधू को उल्टे सात फेरे दिलाये जाकर उस पर चढ़ा सपन्या उतारा जाता है।

यह सपन्या कौन है, उसका यह नाम कैसे पड़ा, कैसे पता चलता है कि सपन्ये ने शादी कर ली है, ऐसे पचासों प्रश्न हैं जो गहरी पैठ चाहते हैं पर लोकजीवन में जो अनुभूत घटना-वार्ता चली आ रही है वह नितान्त कपोल कल्पित भी नहीं कही जा सकती। ये सपन्ये सरल व क्रूर दोनों तरह के होते हैं। कुछ तो स्वप्न में ही आकर सामान्य सी मानता-मनौती करने पर ही लड़की के शरीर से निकल जाते हैं पर कुछ ऐसी टेढ़ी टांग किये घुसे रहते हैं कि छठी का दूध याद दिला देते हैं।

(16) पेरावणा विवाह :

मेलोठेलों में या जंगलों में पशु चराते समय जब गरासिया युवक-युवती के आपस में प्रेमचार हो जाता है तब भी आगे जाकर दोनों विवाह बन्धन में बंध जाते हैं। ऐसी स्थिति में विवाह में कोई रीतिरिवाज नहीं होते परन्तु दापे आदि की अड़चन की वजह से देरी होने की सम्भावना से युवक जंगल में ही युवती के हाथ लगा देता है और घर आकर अपने पिता से कह देता है कि मैंने अमुक कन्या के हाथ लगा लिया है।

तब युवक का पिता कन्या के पिता के पास सन्देशा भेज देता है कि मेरे लड़के ने तुम्हारी लड़की के हाथ लगा दिया है अत: तुम उसका विवाह अन्यत्र मत कर देना। ऐसी स्थिति में लड़की का पिता पंचायत बुलाता है। गांव का मुखिया आता है। लड़के का पिता तथा समधी भी बुलाये जाते हैं और जो कुछ पंच तय करते हैं उतना दापा युवक का पिता कन्या के पिता को देता है तब कन्या का पिता शुभ मुहूर्त निकलवा नये कपड़े पहनाकर लड़की-लड़के को अपने घर से विदा कर देता है। इससे विवाह हुआ समझ लिया जाता है। इस प्रकार का विवाह पेरावणा विवाह कहलाता है।

(17) खेवणा या भगोड़ा विवाह :

यह भगोड़ा वह व्यक्ति होता है जो किसी महिला को भगाकर ले जाता है। भगाकर ले जाई जाने वाली महिला शादीशुदा होती है। इसमें अपहरणकर्ता से दण्ड स्वरूप रूपया वसूला जाकर भगाई गई महिला के पति को दिया जाता है। यह वह राशि कहलाती है जिसे किसी भगोड़े से वसूल की जाती है। इसके साथ-साथ पंच भी उस भगोड़े से दण्ड स्वरूप अच्छी खासी राशि वसूलते हैं। यदि किसी कारणवश झगड़ा देने में व्यक्ति आनाकानी करता है तो जैसे के साथ तैसा व्यवहार किया जाता है। तब भगोड़े के परिवार में से ही किसी विवाहित स्त्री को प्रतिशोधात्मक भावना से जबरन घसीट कर ले जाई जायेगी। भगोड़े वाला यह विवाह 'खेवणा' कहलाता है।

(18) छह भाइयों में एक पत्नी विवाह :

हिमाचल प्रदेश के किन्नोर क्षेत्र में गृहस्थ की मातृप्रधान रीति प्रचलित है। परिवार में यदि भाई छह या छह से कम हैं तो सबकी एक ही पत्नी होगी परन्तु भाइयों की संख्या छह से अधिक है तो दूसरी पत्नी लाने का विधान है। बच्चे होने पर सभी भाई पिता कहलायेंगे। इसमें चाचा, ताऊ की गणना नहीं रहती है। बड़े पिता को 'तेरा बावल' तथा छोटे पिता को 'गीता बावल' कहा जाता है।

(19) रोवण्या सूची विवाह :

विवाह के समय वर एवं वधू दोनों पक्षों में छड़ (शराब) बांटी जाती है। विवाह स्थानीय देवताओं की अनुमति से सम्पन्न होते हैं। जब वर पक्ष बारात लेकर आता है तो लड़की को अचानक इसकी सूचना दी जाती है। सूचना सुनते ही लड़की जोर-जोर से रोने लगती है और उसकी समस्त सखियां भी उसका साथ देती हैं। यह सूचना मकान की छत पर चढ़ कर जोर से चिल्लाकर दी जाती है।

(20) मार्ग धरना विवाह :

आदिवासी क्षेत्रों एवं लाहौलस्वती क्षेत्रों में जब वर पक्ष वाले रीति रिवाजों को निपटा कर लड़की की पालकी उठाकर जाते हैं तो कुछ ही मील की दूरी पर गांव के बाहर लड़की की सखियां बारात के मार्ग में धरना दे देती हैं। बारातियों के द्वारा मार्ग मांगने पर लड़कियां अकड़ जाती हैं। दूल्हे का छोटा भाई और मित्र हाथ जोड़ कर प्रार्थना करते हैं। अधिक देर हो जाने पर सखियां धन की मांग करती हैं। दूल्हा उनको कुछ धन देता है तथा ऊंचे स्वर में प्रतिज्ञा करता है और उन्हें विश्वास दिलाता है कि वह उनकी सखी को कोई कष्ट नहीं देगा। उसे कुशलपूर्वक रखेगा। तब जाकर धरना उठता है। बारात के सदस्य इसे बहुत बड़ा मोर्चा जीतना समझ कर प्रसन्नता से झूम उठते हैं।

(21) मशाल स्वागती विवाह :

किन्नौर क्षेत्र में आई बारात को समस्त गांव के लोग रोक कर मशालों से उसका स्वागत करते हैं। उल्लेखनीय है कि इस अवसर पर सभी उपस्थित लोग बार-बार थूकते हैं। उनका विश्वास है कि इस तरीके से भूत-प्रेत भाग जाते हैं। कुछ स्थानों पर बारात के सारे मार्ग को जूतों आदि से पीट कर भूतों को भगाने की प्रथा है। बारात के वधू-गृह के पास पहुंचने पर कन्या का दादा या ताऊ लड़के की कमर में तलवार बांधता है तथा अपनी ओर से शराब के दो प्याले भेंट करता है। इन प्यालों की प्रथा को स्थानीय भाषा में बारिच कहते हैं।

(22) लड़की घसीट विवाह :

हिमाचल प्रदेश में मेले तो होते ही रहते हैं। इन मेलों में नवयौवनाएं भिन्न-भिन्न प्रकार के कपड़े व गहने पहन कर जाती हैं। पहाड़ी लड़के भी अपनी स्थानीय पोशाक पहन कर घूमते हैं। कोई भी लड़का अपनी पसंद की सुंदर लड़की को घसीट कर अपने घर ले आता है। रोती चिल्लाती लड़की को छुड़ाना अपशकुन माना जाता है। सभी दर्शक बनकर प्रसन्नता से देखते हैं मानो लड़की के भाग्य से उनकी लोटरी निकल आई हो।

रात्रि को सारे गांव की स्त्रियां लड़की को मनाने का प्रयत्न करती हैं। अन्त में उसके हां कर देने पर गांव का प्रमुख व्यक्ति रूवारू (मध्यस्थ) के रूप में शराब की एक बोतल तथा पांच रूपये का नोट लेकर लड़की के गांव में जाता है। उसके माता-पिता से विवाह का आग्रह करता है। माता-पिता की स्वीकृति (जो प्राय: हो जाती है) पर मध्यस्थ के द्वारा अत्यन्त सादे ढंग से विवाह सम्पन्न कराया जाता है। स्थानीय भाषा में इस रीति को दारोश डब-डब कहते हैं।

(23) मान मनावण विवाह :

युवक-युवतियों की मित्रता या प्रेम किसी न किसी रूप में समस्त विश्व में प्रचलित रहा है परन्तु हिमाचल के कुछ क्षेत्रों में इस प्रेम को विवाह में परिणित करने का अनोखा ढंग है। जवान लड़का-लड़की परस्पर मित्रता करते हैं और परस्पर प्रगाढ़ प्रेम होने पर घर से भाग जाते हैं। घर से भागने की इस पद्धति को दमन चलशिश कहते हैं।

इसकी सूचना लड़के के पिता के पास गांव के ही किसी व्यक्ति के माध्यम से आती है। वह लड़की के घर जाकर उसके माता-पिता को मनाने का भरकस प्रयत्न करता है। किसी मध्यस्थ के जरिये लड़की के पिता को शराब एवं पैसे प्रदान करने पर बात पक्की मान ली जाती है। तब लड़की को बुलाकर सगे-संबंधियों के बीच उनका विवाह कर दिया जाता है। कई बार माता-पिता के देर से मानने तक लड़का-लड़की कई-कई दिनों अथवा कहीं-कहीं तो महीनों तक घर से गायब रहते हैं।

(24) झाड़ी-आग के फरे :

आपसी रजामंदी से भागने वाले अगर अपने माता-पिता को विवाह करने के लिए तैयार करने में स्वयं को पूर्णतया असमर्थ पाते हैं या उनका मध्यस्थ लड़की के माता-पिता को तैयार न कर सके तो लड़का-लड़की दोनों दूर जंगल में भाग जाते हैं। सायं को जब सूर्य छुपने को होता है तो दोनों सूर्य की ओर पीठ करके झाड़ी को आग लगा लेते हैं। फिर लड़का लड़की का हाथ थाम कर आग के फेरे लेने लगता है। लड़की उसकी कमीज का पल्लू पकड़ कर पीछे-पीछे चलने लगती है। ऐसी स्थिति में बिना किसी पंडित, दहेज-दक्षिणा या शराब आदि के ही विवाह सम्पन्न हो जाता है। बाद में माता-पिता तथा समाज के द्वारा भी मान्यता मिल जाती है।

(25) शोक धुनी विवाह :

बारात का स्वागत प्रसन्नतापूर्वक बाजे आदि बजा कर किया जाता है। लड़की के माता-पिता के द्वारा बारात के सभी सदस्यों को अच्छे-अच्छे उपहार भी भेंट किये जाते हैं परन्तु जैसे ही लड़की को विदा करने के लिए उसके भाई आदि उसे एक सजी हुई पालकी में बिठाने का प्रयत्न करते हैं वह जोर से कमरे के दरवाजे को पकड़ कर बैठ जाती है। चिल्ला-चिल्ला कर रोना शुरू करती है। उसकी मां एवं बहिनें उसका साथ देती हैं। इस चीत्कार के साथ ही बाजे वाले जोर-जोर से शोक-धुन बजाना प्रारम्भ कर देते हैं।

वातावरण के कुछ शान्त होने पर लड़की की माता अपने जम्बई (दामाद) से लड़की के पालन-पोषण के लिए दूध पर हुए खर्च की मांग करती है। लड़का अपनी सास को लगभग पांच सौ रूपये देकर लड़की ले जाने की अनुमति प्राप्त करता है तब जाकर कहीं लड़की पालकी में बैठती है।

- क्रमांक 18 से 25 तक की जानकारी हस्तांकन से साभार। पाठकों से इस तरह की अपने क्षेत्र की वैवाहिक प्रथा-पद्यतियों पर सामग्री भेजने का अनुरोध है। -क्रमश

(-प्रस्तुति : शब्द रंजन टीम)

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।